(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 51, अंक 5, नवम्बर, 2015,
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

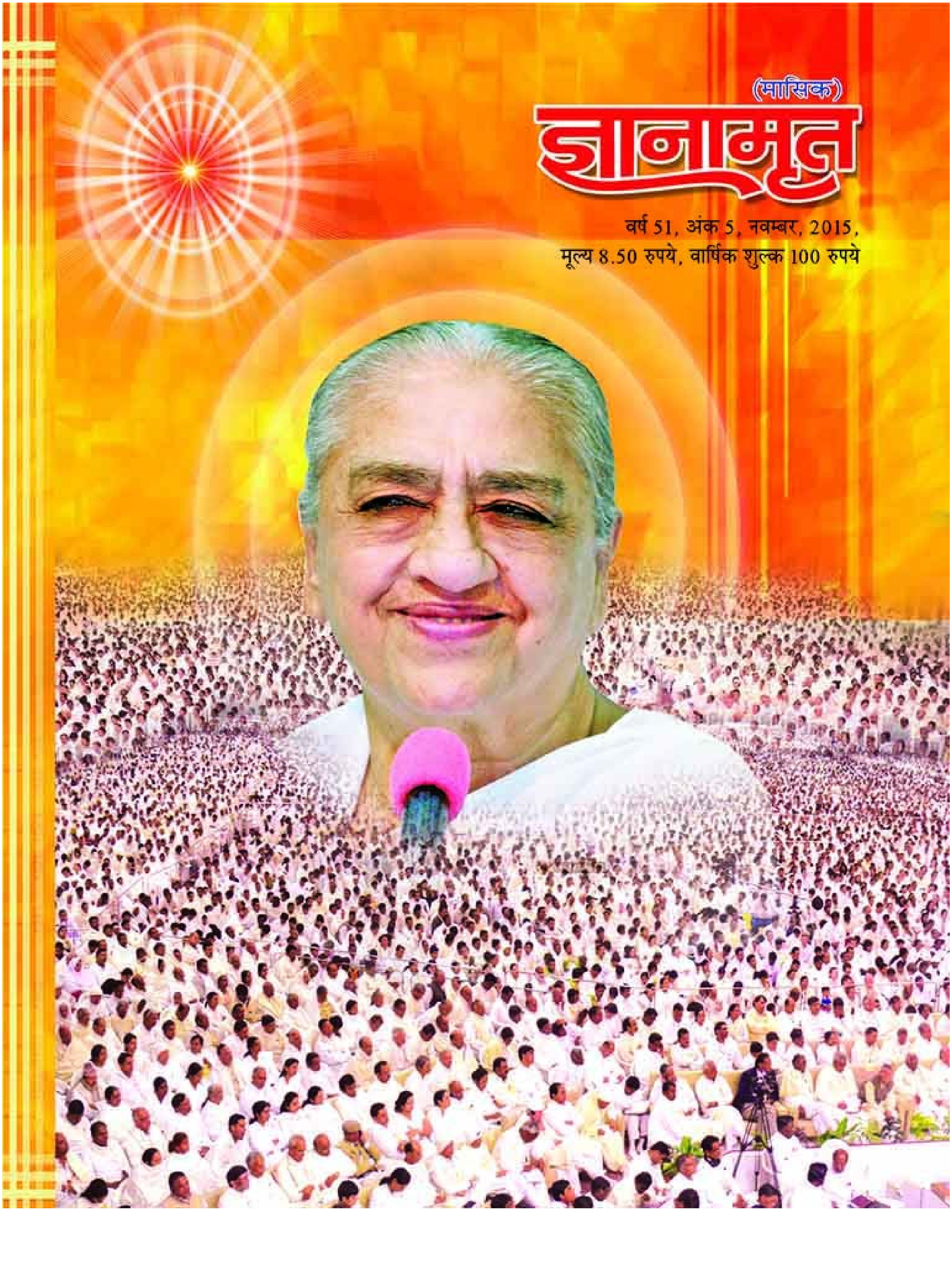

1

2

3

4

5

6

7

8

1.सागवाड़ा (डूंगरपुर)- नवनिर्मित 'दिव्य अनुभूति भवन' की उद्‌घाटन पट्टिका का अनावरण करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी। साथ में ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.कु.विजयलक्ष्मी बहन, ब्र.कु.हंसा बहन, ब्र.कु.पद्मा बहन, भ्राता भूपाल जी तथा अन्य। **2.जोधपुर (लोहावट)**- योगगुरु बाबा रामदेव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.बीनू बहन। साथ में ब्र.कु.पुष्पा बहन। **3.भोपाल**- म.प्र.के राज्यपाल महामहिम भ्राता रामनरेश यादव को ईश्वरीय साहित्य देते हुए ब्र.कु.किरण बहन। **4.करनाल (सेक्टर-7)**- हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रत को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.प्रेम बहन तथा ब्र.कु.कुसुम बहन। **5.कण्डेला**- उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता रामनाईक को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.बबीता बहन। साथ में ब्र.कु.माफी बहन। **6.शान्तिवन (आबू रोड)**- स्पार्क विंग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए ब्र.कु.अंबिका बहन, ए.आई.आई.एम.एस.के निदेशक डॉ.ए.के.महापात्र, उड़ीसा के पूर्व मुख्य सचिव भ्राता एस.बी.मिश्रा, ब्र.कु.रमेश शाह तथा अन्य। **7.रायपुर**- 'अलविदा डायबिटीज' कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए छ.ग.के कृषि एवं जल संसाधन मंत्री भ्राता बृजमोहन अग्रवाल, डॉ.श्रीमन्त साहू, ब्र.कु.सविता बहन, ब्र.कु.किरण बहन तथा ब्र.कु.उमा बहन। **8.पणजी (गोवा)**- किसान सशक्तिकरण अभियान का उद्‌घाटन करते हुए कृषि मंत्री भ्राता रमेश तवाडकर, ब्र.कु.दर्शना बहन, कृषि विभाग के निदेशक भ्राता उल्हास पाई काकोडे, ब्र.कु.शोभा बहन तथा अन्य।

संजय की कलम से

धर्म की आवश्यकता क्यों ?

मनुष्य तथा अन्य जीव प्राणियों में यही एक विशेष अन्तर है कि मनुष्य माता-पिता, भाई-बहन, पुत्र-पुत्री, अतिथि-पड़ोसी आदि-आदि नामों द्वारा सूचित होने वाले सम्बन्धों को समझता है और उनसे उसका क्या व्यवहार होना चाहिए – इसका ज्ञान धारण करने की क्षमता रखता है। यदि यह ज्ञान उसे प्राप्त न हो तो वह उस गन्ने के समान है जिसमें रस न हो अथवा उस पक्षी के समान है जिसके पंख टूट चुके हों। फिर युवावस्था में जबकि मनुष्य में शक्ति का एक ज्वारभाटा होता है, उभरती उमंगें और नई तरंगें होती हैं, तब यदि दिशा-निर्देश देने वाला धर्म-ज्ञान न हो तो वैसा ही अनिष्ट होने की सम्भावना बनी रहती है, जैसा कि नदी में बाढ़ आने से अथवा पृथ्वी के नीचे उग्र परिवर्तन के कारण भूकम्प आने से अथवा ज्वालामुखी के फूट निकलने से होता है। 'धर्म' वह अंकुश है जो मनुष्य को सन्मार्ग से विमुख होने से रोकता है। यह मनुष्य के विचारों को एक ऐसा सुन्दर बाँध देने का कर्त्तव्य करता है जो सुदृढ़ मर्यादा में रखते हुए उसकी शक्ति को रचनात्मक कार्यों में लगाता है। यह मनुष्य को शान्ति के सागर परमात्मा से जोड़कर, मनुष्य-मनुष्य के मन को मिलाने का काम करता है और उसमें प्रेम का रस भरता है। मनुष्य के मन को सन्तुलन और सन्तोष प्रदान करने वाला 'धर्म' ही मानव समाज की एकमात्र आशा है। धार्मिक शिक्षा को छोड़ना गोया संसार को अनैतिकता, उच्छृंखलता, असन्तोष, नहीं-नहीं विनाश की ओर ले जाना है।

'धर्म' से मेरा अभिप्राय कर्मकाण्ड से नहीं है और न ही अन्धश्रद्धा पर आधारित या विवेक-विरुद्ध एवं तर्कविहीन किन्हीं सिद्धांतों से है। मैं तो धर्म को एक ऐसी विद्या मानता हूँ जो विवेक सम्मत हो और हमारे दैनिक जीवन को सुख-शान्ति सम्पन्न बनाने वाली हो। अत: धर्म का कर्म से बहुत गहरा सम्बन्ध है परन्तु आज एक बहुत बड़ा अनिष्ट यह हुआ है कि धर्म और कर्म का क्षेत्र अलग-अलग मान लिया गया है अर्थात् आज लोगों का ऐसा दृष्टिकोण बन चुका है कि जब वे किसी धार्मिक स्थान पर जाते हैं तो पूजा, प्रवचन, प्रार्थना, प्रेयर या इबादत का आधार लेते हैं और जब कर्मक्षेत्र में प्रवेश करते हैं तो 'धर्म' को धर्मस्थान पर ही छोड़ आये होते हैं और व्यवसायिक जीवन, पारस्परिक सम्बन्धों इत्यादि में उसे नहीं अपनाते।

शिव बाबा का सन्देश

अत: परमपिता परमात्मा शिव का सन्देश है कि आज मनुष्य कर्म और धर्म से अलग हो जाने के कारण अथवा धर्म-विमुख होने के कारण विकर्म कर रहा है। अत: उनकी आज्ञा है – 'धर्म-ज्ञान' प्राप्त करके हम पवित्र बनें और योगी बनें ताकि संसार में फिर से धर्मयुग और उसके फलस्वरूप सतयुग आ जाए। यदि युवा-वर्ग इस सन्देश से लाभ उठाये तो सचमुच देश का कल्याण हो जाए। ❖

अमृत सूची

- आन्तरिक और बाहरी प्रकृति (सम्पादकीय) 4
- 'पत्र' संपादक के नाम 6
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के .7
- ईश्वरीय कारोबार में..........9
- सर्व सम्बन्धों की मीठी सैक्रीन 12
- हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई ..15
- मिली एक नई ज़िन्दगी........17
- शरीर की वृद्धि...............18
- शिक्षक ने दिखाई राह........20
- मेरा डॉक्टर बाबा...............21
- मानव जीवन में धन 22
- मैं आशावादी और 25
- मुसीबत बनी सूली से कांटा ..26
- कदम-कदम पर 27
- ईर्ष्या अभिमान की बेटी है....29
- सचित्र सेवा समाचार 30
- दिवंगत ब्रह्माकुमारी सावित्री ..32
- ग्लोबल अस्पताल द्वारा 33
- बाबा ने की तन और 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

आन्तरिक और बाहरी प्रकृति

हम देखते हैं, जब बरसात पड़ती है तो ऊँची-नीची गलियों, सड़कों पर जहाँ-तहाँ पानी भरने और बहने लगता है। हम उस गली या सड़क को पार करने के लिए सावधानीपूर्वक कपड़ा सम्भालते हुए, चौकन्ने होकर कदम आगे बढ़ाते हैं ताकि पाँव को कीचड़, मिट्टी, पानी न लगने पाए। लग भी जाए तो गन्तव्य पर पहुँचकर साफ कर लेते हैं, जानते हैं, बरसात होती है तो ऐसा तो होता ही है।

एक को बदलना सरल है या ज्यादा को?

जैसे अव्यवस्थित रूप से जमा हुए पानी, कीचड़ या मिट्टी को हमने बदलने का प्रयास नहीं किया, न उन पर झुंझलाए, वे जैसे थे वैसे ही स्वीकार कर अपने को बचा-बचा कर मार्ग बना लिया इसी प्रकार यदि मनुष्यों के मन का बहाव भी अव्यवस्थित हो, तो उनके आस-पास रहते भी, वे जैसे हैं वैसे रूप में उन्हें स्वीकार करते हुए, बिना झुंझलाहट, उत्तेजना, तर्क, वितर्क, व्यर्थ संकल्पों के अपना मार्ग बनाया जा सकता है। हम किस-किस गली के अव्यवस्थित पानी को बदलने जाएँ, इससे तो अच्छा है कि पाँव बचाकर अपना काम निकाल लें। इसी प्रकार हम सोचें कि हम किस-किस के मन को बदलने का प्रयास करें। संसार में तो 700 करोड़ लोग हैं, उन सबसे सीधा वास्ता ना भी हो तो भी आठ-दस या कम-ज्यादा से तो वास्ता पड़ता ही है। अब विचार करें, मैं एक और वे आठ-दस या कम-ज्यादा। एक को बदलना सरल है या एक से ज्यादा को? निश्चित रूप से एक को बदलना सरल है। यदि एक पर मेहनत करने से काम निकल सकता है तो फिर आठ-दस पर मेहनत क्यों की जाए? वो एक मैं ही हूँ, मैं तो सदा ही मेरे पास हूँ। दूसरों को बदलने के लिए उन तक पहुँच बनाने में मेहनत करनी पड़ेगी पर मैं तो सदा ही अपनी पहुँच में हूँ।

हम संसार में क्यों आए?

मानव स्वभाव को भी प्रकृति कहा जाता है। जैसे बाहरी प्रकृति अर्थात् पाँच तत्वों में आने वाले किसी भी परिवर्तन को – आंधी, तूफान, भूकम्प आदि को, असमय लगने या झड़ने वाले फल-फूलों को, अधिक या कम गर्मी-सर्दी को हम साक्षी हो देखते हैं और अपने लक्ष्य पर केन्द्रित रहते हैं, इसी प्रकार विभिन्न मानवों की प्रकृति (स्वभाव) भी भिन्न-भिन्न है, उसे भी साक्षी होकर देखें और अपने लक्ष्य पर केन्द्रित रहें। हमें यह देखना है कि हम इस संसार में क्यों आए? क्या हम लोगों को बदलने आए हैं? अपने से भिन्न सोच रखने वालों को अपने अनुसार ढालने के लिए आए हैं? नहीं, हम तो स्वयं परमात्मा पिता की योजना के अनुसार ढलने आए हैं। अत: हमें अपनी ऊर्जा, ईश्वरीय कार्य अनुसार ढलने में खर्च करनी है, न कि दूसरों को अपने अनुसार ढालने में।

मनुष्य को बनाते हैं उसके विचार

कहा गया है, Man is the product of his own thoughts. मानव को बनाने वाले हैं उसके विचार। हम जो कुछ हैं, हमारे विचारों की देन हैं। इसमें कोई शक नहीं कि पारिवारिक वातावरण, माता-पिता, शिक्षक, समाज – इन सबका प्रभाव हम पर होता है पर उस प्रभाव को हम किस रूप से स्वीकार करते हैं, यह हमारे विचारों पर आधारित है। एक शराबी पिता के दो पुत्र थे। दोनों रोज पिता को शराब पीते देखते थे। बड़ा पुत्र, बड़ा होकर पक्का शराबी बन गया और छोटा पुत्र शराब पीने वालों की छाया से भी बचता था। दोनों से शराब पीने और न पीने का कारण बारी-बारी पूछा गया। बड़े पुत्र ने कहा, पिता को रोज पीते देख न जाने कब यह आदत लग गई, मालूम

ही नहीं पड़ा। छोटे पुत्र ने कहा, पिता जी की गिरती सेहत, धन का सदा अभाव, समाज में तिरस्कार और लड़ने-झगड़ने के स्वभाव को देख मैंने प्रण किया कि इस गन्दी चीज को कभी नहीं छुऊँगा। अब देखिए, एक ही पिता के दो पुत्र पर सोच इतनी भिन्न!

विचार–शक्ति का बड़े पैमाने पर नाश

भावार्थ यही है कि हमें हर परिस्थिति में अपने विचारों को ठीक-ठाक बनाए रखना है क्योंकि ये विचार ही फिर हमें बनाते हैं। कई बार हम छोटी-छोटी बातों के लिए विचार जैसी बड़ी शक्ति को बड़े पैमाने पर नष्ट कर देते हैं और हमें अहसास तक नहीं हो पाता। किसी व्यक्ति को हमने बाजार से 4 सामान लाने भेजा। वह तीन ही लाया, एक भूल गया। अब हम अपने मन की स्थिति को देखें। भूल उसने की और सज़ा हम भुगतेंगे। यह भी हो सकता है, हम उस पर गुस्सा करें, यदि किसी कारण गुस्सा नहीं कर सकते तो अन्दर ही अन्दर दुखी होंगे, भोजन, नींद, आराम सबको डिस्टर्ब करेंगे और उस व्यक्ति के पूरे इतिहास को दोहराते रहेंगे कि यह अमुक समय पर यह भूला, अमूक समय पर वो भूला, इसे किसी की बात का सम्मान नहीं, किसी की सुविधा का ख्याल नहीं...। जो तीन चीज़ें आ गईं, वे पड़ी हैं, हम उन्हें ना देख रहे हैं, ना प्रयोग कर रहे हैं, हमें तो बस एक ही रट लगी है कि वो चौथी चीज़ भूली क्यों?

क्या हम अपने को नियन्त्रित कर पाए?

भूली इसलिए कि उस व्यक्ति की प्रकृति भूलने की है। जैसे बाह्य प्रकृति जहाँ-तहाँ पानी गिरा देती है, ओले गिरा देती है, भूकम्प कर देती है... इसी प्रकार व्यक्ति की विकृत प्रकृति भी उससे भूलें करवा देती है। लापरवाही, आलस्य, कामचोरी, आरामपसन्दी, क्रोध, रोब, हिंसा... ये सब विकृत मानवीय प्रकृति ही तो है। जब हम बाहर वाली को सह लेते हैं तो यह भी सहनी पड़ेगी और फिर हमारी प्रकृति भी तो विकृत है। छोटी-सी प्रतिकूल बात आते ही हमें भी तो रोष, क्रोध, दुख, व्यर्थ चिन्तन – जाने अन्दर में क्या-क्या प्रकट हो गया, क्या हम अपने को नियन्त्रित कर पाए? यदि अपने को नियन्त्रित नहीं कर पाए तो दूसरे को नियन्त्रित करने की शक्ति कहाँ से लाएंगे? क्या अपने हाथों को मेहंदी लगे बिना दूसरों को लगाई जा सकती है?

विकृतियाँ मिटती हैं राजयोग से

आज बाहरी और आन्तरिक दोनों प्रकृति विकृत हैं। एक समय था जब दोनों सतोप्रधान थीं। बाहरी विकृति आन्तरिक विकृति का परिणाम है। इन विकृतियों को सदाकाल के लिए मिटाने का आधार है राजयोग का अभ्यास। विकृतियाँ बनती हैं विकर्मों के कारण। विकर्म अर्थात् विकारों के वशीभूत होकर किए जाने वाले कर्म। बार-बार विकर्म हो जाने से स्वभाव में विकृति बढ़ती जाती है। जब भी हम अच्छा या बुरा कर्म करते हैं, तो तुरन्त ही उसका प्रभाव आत्मा में संस्कार रूप में भर जाता है। ये संस्कार ही आगे कर्मों के लिए उठने वाले संकल्पों को प्रेरित करते हैं और ये संस्कार आत्मा के साथ अगले जन्मों तक भी चलते हैं। इन्हीं के आधार पर मनुष्य को जन्म, शरीर, आयु, सम्पत्ति, परिवार इत्यादि मिलते हैं। विकृतियों से बचने के लिए बुरे संस्कारों को भस्म करना जरूरी है। इसके लिये आत्मिक शक्ति की आवश्यकता है जो केवल सर्वशक्तिवान पारलौकिक परमपिता परमात्मा शिव से बुद्धियोग लगाकर ही प्राप्त की जा सकती है। जैसे सूर्य की किरणों को 'लेन्स' द्वारा एकत्रित करके अग्नि उत्पन्न करते हैं वैसे ही ज्ञानसूर्य परमात्मा से बुद्धि की तार जोड़कर योगाग्नि प्रज्वलित की जा सकती है जिससे कि पुराने, अशुद्ध संस्कार भस्मीभूत हो जाएँ। इस योग से देह और देह के सम्बन्धों की जंजीरें मनुष्यात्मा की टूट जाती हैं और वह सब प्रकार की विकृतियों से और उनके दुखदायी परिणामों से मुक्ति पा लेती है। राजयोग का अभ्यास

निरन्तर किया जा सकता है परन्तु इसके लिए परमपिता परमात्मा के स्वरूप, धाम, गुणों एवं कर्त्तव्यों का परिचय तथा उनसे बुद्धियोग जोड़ने की विधि का ज्ञान आवश्यक है जो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की किसी भी शाखा से प्राप्त किया जा सकता है।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

‘पत्र’ संपादक के नाम

मैं सांसारिक तथा आर्थिक परेशानियों से तंग आ चुका था। बुद्धि काम नहीं कर पाती थी। किसी काम में मन नहीं लगता था। ऐसे में एक दिन अचानक एक पुरानी ज्ञानामृत पत्रिका मेरे हाथ लग गयी। मैंने सहज भाव से पढ़ना शुरू किया और आश्चर्य की बात यह हुई कि इसने मेरे मनोबल पर बिजली के करंट जैसा काम किया। मैंने तुरंत सदस्यता शुल्क भरकर यह पत्रिका मंगाई। अब मैं नियमित रूप से इसे पढ़ता हूँ। परिणाम यह हुआ कि मेरे जीवन में पूर्णत: क्रांति आ गयी और मैं शांतिपूर्ण, सुखमय जीवन अनुभव कर रहा हूँ।

– राजेन्द्र विरोकार, शिवनगर उरल, महाराष्ट्र

ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ने का सुखद सौभाग्य मिला। सभी प्रकार के संकटों, विकारों व दुखों से छुटकारा पाने के लिये सभी पाठकों से निवेदन व आग्रह है कि ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ें, अमल करें व सहपाठियों को पढ़ने के लिये दें।

– बाबूलाल सोनी, मन्दसौर (म.प्र.)

अगस्त, 2015 की ‘ज्ञानामृत’ का अध्ययन किया तो मालूम हुआ कि पत्रिका ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने में पूर्णरूपेण सक्षम सिद्ध हो रही है। पत्रिका सटीक है, अद्वितीय है। संजय जी ने अपनी तीखी-पैनी सोच के आधार पर तृतीय पृष्ठ पर रक्षाबन्धन की प्रचलित परम्परा से हट कर, श्रेष्ठ ज्ञान की बात उजागर कर पवित्र मार्ग का निर्देशन दिया है। हर आत्मा को रक्षा- सूत्र ऐसा बाँधो कि वह सदैव के लिए क्रोध, काम, मोह, लोभ और अहंकार से मुक्त हो जाए। छोटे-बड़े सभी पाठकों से मेरा खुल्लम-खुल्ला अनुरोध है कि वे ‘रक्षा-बन्धन’ लेख को अवश्य ही गहराई से पढ़ें और इस अच्छी बात को अन्यों तक पहुँचाने का श्रम करें। तभी जाकर देशवासियों का चरित्र ऊँचाइयों को छूने में समर्थ हो सकेगा, जीवन-वृत्त सात्विक एवं वृत्ति-दृष्टि पवित्र होगी। धन्य हैं संजय जी जिन्होंने ‘रक्षा-बन्धन’ लेख से अपनी सूझ-बूझ के बल पर एक नवाचार का प्रादुर्भाव किया।

– अत्तर सिंह, सूरजपुर (गोधा), अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

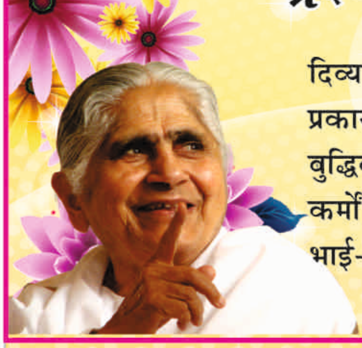

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्नः हमें अपनी स्थिति कैसी बनानी है?

उत्तरः बाबा हमेशा तीन बातें कहते थे, बच्चे मधुबन आते हैं, एक तो रिफ्रेश होने के लिए, दूसरा बैटरी चार्ज करने के लिए, तीसरा बादल भरने के लिए, बादल बन करके जाए वर्षा करेंगे जिसकी बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है, वो चलते चलते खड़े हो जाते हैं। उन्हें अगर किसी का सहयोग मिलता है तो शक्ति आ जाती है। साकार बाबा की कई बातें, बाबा के चरित्र और बोल, बाबा की दृष्टि, हर पल, हर घड़ी स्मृति में आते हैं, और कुछ याद नहीं आता। बाबा की भावना थी कि सबका भला हो।

इन आँखों से किसी को नहीं देखो, तब ये आँखें बहुत अच्छा काम करेंगी। ओनली सी फादर, फॉलो फादर। और कुछ नहीं करना है, कहना भी नहीं है, सोचना भी नहीं है। कर्त्तापन के भान से परे रहना है। मैंने कुछ नहीं किया है सिर्फ फॉलो किया है। मान-अपमान की इच्छा से परे अभोक्ता, ऐसी स्थिति बनानी है। बाबा की मदद भी तभी खींच सकते हैं जब समय की वैल्यू है। संकल्प, समय, सहयोग, सच्चाई। सच्चाई के आधार से संकल्प में कोई ऐसी बात आई नहीं है जो मुझे सोचना वा कहना पड़े कि इनका संस्कार ऐसा है। यदि सोचा, यही बात बोलेगा, यही करेगा... गई इज्जत। मैं अकर्त्ता हूँ, जो बाबा को कराना है, ड्रामा एक्यूरेट है, यज्ञ रचता बाबा है, बाबा का यज्ञ है। बाबा की सेवा में मददगार बनने वालों को रिटर्न बाबा दे रहा है, हमको सिर्फ शुभ चिंतक रहना है। हम यह नहीं कह सकते हैं कि यह देखो, क्या करता है, ऐसे अंगुली नहीं उठानी है, यह हमारी ड्यूटी नहीं है। हमारी ड्यूटी है, अगर देवता बनना है तो पहले सूक्ष्मवतन वाले फरिश्ते बनकर रहना है। देवता तो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बनेंगे। बनाने वाला बाबा बैठा है, बनाना उसका काम है, बनना मेरा काम है। जो ड्रामा में होगा, तो भावी पहले या भगवान पहले या भाग्य पहले? मैंने कहा, जो भाग्य में होगा... यह नहीं कहना है, भाग्य बनाना है कल्प-कल्प के लिए।

प्रश्नः प्यारे बाबा का दिया हुआ प्यारा-सा मन्त्र कौन-सा है?

उत्तरः जो राइट है वही करना है, वह छोड़ना नहीं है, यही किसी भी सिचूएशन का सोल्यूशन है। कोई कारण नहीं बताना है। कारण कोई है? नहीं ना। तो चेक करके चेंज कर लो। जो करना है, अब कर लो, कल किसने देखा... यह मंत्र है। जो बाबा कहे, जैसे कहे, वैसे मुझे करना है। हिम्मते बच्चे, मददे बाप। पांच शब्द याद रखना, पहला बाबा, दूसरा मैं आत्मा हूँ, तीसरा यज्ञ की सेवा, चौथा ईश्वरीय परिवार और पाँचवाँ संगम का यह समय। समय व्यर्थ नहीं गंवाना है, समय अच्छा है, जो करना है अब कर ले। अभी भी समय है सतोगुणी बनने का, रजोगुण, तमोगुण छोड़ने का। नयन, कान, मुख सतोगुण से चमकते हुए स्टार बन जाते हैं। सतोगुणी बाबा को साथ ले करके,

बाबा के हर महावाक्य का मनन-चिन्तन करता है। सच्चाई, प्रेम और विश्वास से करते चलो तो अन्त मते सो गते अच्छी होगी, यह गैरंटी है। न्यारा और प्यारा, दो-दो शब्दों में सारे ज्ञान का सार आ जाता है। बाबा हम बच्चों को होलीहंस बना रहा है। हंस दूसरे पंछियों से न्यारा रहता है। अपने को हंस रूप में देखो तो लगेगा कि मैं साधारण नहीं हूँ। हंस तैरना भी जानता है, उड़ना भी जानता है। जब आत्म अभिमानी स्थिति है माना उड़ रहे हैं। मैं आत्मा हूँ। कारोबार में भारीपन ज्यादा हो जाता है। बाबा ने प्यार से समझाया कि हर आत्मा का पार्ट न्यारा है, बना बनाया ड्रामा है लेकिन बदलने का समय अब है। हम बदलेंगे तो जग बदलेगा, बहुत सहज बात है। बाबा कहते हैं, मैं किसी को प्रेरणा नहीं देता हूँ लेकिन हमारा जीवन प्रेरणा देने लायक हो, कोई गलती न हो। संगमयुग में छोटी गलती भी बहुत नुकसानदायक है।

प्रश्न: आप कौन-सी चोरी सिखाती हैं?

उत्तर: आत्म अभिमानी स्थिति है, शिव बाबा की याद है तो कार्य व्यवहार में सर्व गुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी बनना सहज है। काम नहीं, क्रोध नहीं, कोई लोभ, मोह नहीं इसलिए बाबा हमेशा कहता है कि मीठा बनो। मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा। मेरा बाबा कितना मीठा है। बाबा में अनेक गुण हैं ना। सर्व गुणों में सम्पन्न है इसलिए बहुत प्यारा लगता है। तो पुरुषार्थ में मुझे प्यारा बनना है, मीठा बनना है, सर्व गुण सम्पन्न बनना है। छुप-छुप के गुण देख लो, अवगुण नहीं देखना है, यह चोरी करना सीखो।

प्रश्न: योग लगने में सबसे बड़ी बाधा क्या है?

उत्तर: कितने प्रकार की बाबा याद सिखाते हैं, हर प्रकार का अनुभव करना चाहिए। बाबा को बच्चा बनाने का भी अनुभव बड़ा अच्छा है, इसमें भी बहुत मजा है। जिसका मैं बच्चा हूँ वो मेरा बच्चा... वन्डरफुल। बच्चा हूँ तो कैसा? आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार, फरमानबरदार। नम्बरवार नहीं, नम्बरवन बच्चा। कभी-कभी बाबा कहता है, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार यादप्यार और गुडमार्निंग लेकिन मैं नम्बरवार में नहीं आऊं। नम्बरवन में आना है। संकल्प को ढीला-ढाला नहीं करना है। वो मेरा बच्चा है तो कैसा है? बच्चा बनने से जितना प्यार मिला है, उतना मैंने बच्चा बनाके प्यार दिया है! हर एक यह अनुभव कर सकता है। अगर किसी को नाम-रूप में फंसने की आदत है तो बाबा उसको मिलेगा नहीं इसलिए किसी के भी नाम-रूप में नहीं फंसना। कोई मेरे नाम-रूप में फंसे या मैं किसी के नाम-रूप में फंसूँ, इससे न उसका योग लगेगा, न मेरा योग लगेगा। भले उसके गुण याद करें पर नाम-रूप से न्यारा तो बाबा का प्यारा।

प्रश्न: कर्म करते मन की स्थिति कैसी हो?

उत्तर: एक तो बाबा सर्वशक्तिवान है, दूसरा कर्म बड़े बलवान हैं तो दिन-रात, सुबह-शाम यह कभी भूले नहीं। कर्म करते कर्मयोगी और आपस में रूहानियत की खुशबू हो जिससे वायुमण्डल बहुत अच्छा बन जाता है। सतयुग में भी ऐसा वायुमण्डल नहीं होगा, जैसा अभी है। जो परमात्मा बाप में ज्ञान है वो हमारे में सब भर रहा है। हम ज्ञानी तू आत्मा परमात्मा को प्यारे लगते हैं। ज्ञान बाबा का पर बाबा हम बच्चों को देता है, समझाता है। आत्मा ज्ञान को धारण करती है, बाबा का प्यार लेती है। ज्ञान को धारण करने से, योगयुक्त रहने से, आपस में रूहानी कनेक्शन से, यज्ञ-सेवा अथक भाव से करने से सदा उन्नति होती रहती है। बेहद का बाबा रहता भी वतन में है। बाबा कभी इसमें बैठा है, कभी यह बाबा उस बाबा की याद में बैठा है, ये दोनों सीन बड़ी अच्छी हैं। हम हर समय, हर घड़ी ऐसे मीठे बाबा को फॉलो करें। फॉलो करना इज़ी है, जैसे वो करता है वैसे करें। जो कहता है वो करें। जो करता है वो करें। तो फॉलो फादर करने से सुख मिलता इलाही है। ❖

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 24

ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

इस लेखमाला में मैं अपने विचार लिख रहा था कि कैसे हम वर्तमान संगमयुगी और भविष्य सतयुगी दैवी कारोबार कर सकते हैं। उसके बीच में एक अलग विषय पर मैं अपने विचार इस लेख में लिख रहा हूँ।

मैंने पिछले लेख में लिखा था कि शिवबाबा ने बताया कि ड्रामा सत्य है। यह बात तब निकली जब हमारी राधे माता ने शरीर छोड़ा और उसके बाद जब उनको भोग लगाया गया तो उनकी आत्मा शील इन्द्रा दादी जी (संदेशी) के तन में आई। तब मैंने उन्हें पूछा कि आपने अभी कहां जन्म लिया है? इस पर उन्होंने कहा कि मैं जब वतन से नीचे आ रही थी तब मैंने बाबा को कहा था कि बाबा, रमेश भाई मुझसे यह प्रश्न पूछेंगे कि आप अभी कहां हो, आपने कहां जन्म लिया है तो मैं उनसे क्या कहूँ? बाबा ने कहा कि बच्ची मैं आपकी बुद्धि की लाइन क्लीयर रखूँगा, अगर आप रमेश भाई को बताना चाहो तो बताओ, नहीं तो नहीं। फिर राधे माता ने शिवबाबा से कहा कि बाबा जैसे आप श्रीमत देंगे वैसे ही मैं करूंगी। बाबा ने उन्हें कहा कि बच्चे को यह कहना कि यह ड्रामा रीयल है अर्थात् सत्य है इसलिए उसकी मर्यादा में रहकर सब कार्य चलें तो अच्छा होगा। बाबा ने कहा कि यह सृष्टि रूपी ड्रामा बनावटी (Artificial) नहीं है, यह वास्तविक (Real) है। ड्रामा का राज़ अगर बाबा पहले से ही बता देंगे तो ड्रामा वास्तविक नहीं बल्कि बनावटी बन जायेगा।

महत्वपूर्ण बात यह है कि ड्रामा वास्तविक है। शास्त्रों को लोग सत्य मानते हैं। शास्त्रों में कहते हैं कि **ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या**। वे लोग परमात्मा को ब्रह्म मानते हैं अर्थात् केवल ब्रह्म को ही सत्य मानते हैं और जगत में जो कुछ है वह मिथ्या, असत्य है। परंतु शिवबाबा कहते हैं कि ड्रामा सत्य है और होना भी चाहिए क्योंकि हर पाँच हजार वर्ष के बाद यह ड्रामा रिपीट होता है। इसमें हर आत्मा का पार्ट सत्य है और अविनाशी है इसलिए कोई भी आत्मा इस ड्रामा से बीच में वापिस नहीं जा सकती अत: मोक्ष जैसी कोई चीज है ही नहीं। किसी को भी सम्पूर्ण मुक्ति नहीं मिल सकती। हर चीज ड्रामानुसार फिक्स है तो ड्रामा को मिथ्या कैसे कह सकते हैं?

वैसे यह शास्त्रकारों के लिए समस्या है क्योंकि शास्त्रकार मानते हैं कि परमात्मा सत्य है और यह सृष्टि परमात्मा की रचना है। आदि शंकराचार्य जी ने कहा है कि **लिलावत तू कैवल्यम्** अर्थात् परमात्मा ने लीला करने के लिए ही इस सृष्टि की रचना की है। तब एक स्वाभाविक प्रश्न है कि सत्य परमात्मा की रचना असत्य कैसे हो सकती है अर्थात् परमात्मा की रचना सदा सत्य ही होनी चाहिए जिसे संस्कृत में कहते हैं कि **सत्येन सत्य जायते**।

इसी प्रकार दूसरा प्रश्न है –एक ओर कहते हैं कि जगत मिथ्या है और दूसरी ओर कहते हैं कि परमात्मा कण-कण में व्याप्त है। इस प्रकार की मान्यता कैसे सत्य हो सकती है? संस्कृत में कहते हैं **असतेन् सत्य किम जायते?** अर्थात् अगर जगत असत्य है तो इस असत्य जगत में परमात्मा कण-कण में कैसे हो सकते हैं? इसी प्रकार ब्रह्म सत्य और जगत मिथ्या का प्रश्न उठता है। शिवबाबा के ज्ञान के अनुरूप यह कह सकते हैं कि परमात्मा भी सत्य है और ड्रामा भी सत्य है।

सभी शास्त्रकार 'ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या' को नहीं मानते हैं। श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में सांख्ययोग है, उसे मानने वाले कहते हैं कि परमात्मा, प्रकृति और पुरुष (आत्मा) शाश्वत (immortal) हैं। प्रकृति और पुरुष में केवल रूपांतरण होता है, ये कभी नष्ट नहीं होते। प्रकृति पहले सतोप्रधान होती है और फिर रजो, तमो में आती है वैसे ही आत्मायें भी

पहले सतोप्रधान और फिर रजो तथा तमो अवस्थाओं से गुजरती हैं अर्थात् आत्माओं की केवल स्थिति (Quality) परिवर्तन होती है, संख्या (Quantity) नहीं। ऐसा सांख्ययोग में कहा गया है।

मैं शास्त्रों या शास्त्रकारों पर टीका नहीं कर रहा हूँ परंतु परमात्मा द्वारा हमें जो ज्ञान मिला है उस आधार पर ये बातें लिख रहा हूँ। शास्त्रकारों ने अद्वैतवाद बताया अर्थात् परमात्मा एक है, अजर, अमर, अविनाशी है। परमात्मा शाश्वत है, यह बात आदर्श है परंतु बाद में शास्त्रकारों के विचारों में भी परिवर्तन आया। फिर उन्होंने शुद्ध अद्वैतवाद बताया, कुछ पंडितों ने विशुद्ध अद्वैतवाद बताया और फिर तीसरी विचारधारा वाले पंडितों ने शुद्धाशुद्ध अद्वैतवाद की व्याख्या की। इस प्रकार उनके विचारों में कालांतर में परिवर्तन हुआ। मैं यहां पर अद्वैतवाद के विस्तार में नहीं जाता हूँ, नहीं तो यह लेख बहुत लम्बा हो जायेगा। परमात्मा एक हैं, सर्व के रचयिता हैं, पिता हैं। गीता के चौथे अध्याय में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि मेरे और तुम्हारे बहुत जन्म बीत गये हैं लेकिन मुझे मेरे सारे जन्म याद हैं और तुम्हें याद नहीं हैं इसलिए यह गीता का ज्ञान मैंने तुम्हें फिर से दिया है। पहले मैंने यह गीताज्ञान सूर्य को दिया, सूर्य ने मनु को दिया, मनु ने फिर इक्ष्वाकु को दिया और समयांतर में यह ज्ञान प्राय:लोप हुआ और आज मैं फिर से इसे तुम्हें दे रहा हूँ। इस बात पर भी शास्त्रकारों का मतभेद है क्योंकि परमात्मा ने सूर्य को ज्ञान दिया, ऐसी कोई भी बात दशावतार की बातों में नहीं आती। तो फिर परमात्मा ने सूर्य को कैसे यह ज्ञान दिया होगा? और अगर दिया होगा तो वह गीता आदि गीता हो गई। उस आदि गीता में क्या है, यह किसी को भी मालूम नहीं है और प्रश्न यह भी उठता है कि परमात्मा ने किस रूप में सूर्य को ज्ञान सुनाया? वर्तमान समय के विज्ञान युग में हम जानते हैं कि सूर्य एक तेजस्वी सितारा है। सूर्य को भक्ति में सूर्य नारायण कहते हैं तो सूर्य का मनुष्य अवतार कैसा होगा और उसे किस रूप में परमात्मा ने ज्ञान दिया होगा यह भी एक प्रश्न है और फिर सूर्य ने मनु को ज्ञान दिया वह भी कैसे दिया होगा, यह भी एक प्रश्न है क्योंकि सूर्य सितारा है और मनु मनुष्यों का आदि पिता है (जैसे ब्रह्मा की संतान ब्राह्मण हैं वैसे ही मनुष्य मनु की संतान हैं) अर्थात् उस आदिकाल में सूर्य ने मनु को अर्थात् मनुष्य को यह गीताज्ञान कैसे दिया होगा और फिर मनु ने इक्ष्वाकु को कैसे गीताज्ञान दिया ये सब गुह्य प्रश्न हैं। परमात्मा, सूर्य, मनु और इक्ष्वाकु ये सब किन पात्रों के नाम हैं, वे सृष्टि पर कब अवतरित हुए, यह भी प्रश्न है। बाद में यह गीताज्ञान कैसे प्राय:लोप हुआ, इसके लिए कौन निमित्त बना, इन सब बातों के बारे में सोचना चाहिए। अगर परमात्मा सर्वव्यापी हैं तो उनकी उपस्थिति में यह गीताज्ञान प्राय:लोप कैसे हुआ यह भी विचारणीय है। पहले तो मैं जो कुछ सुनता था, उन सब बातों को परमात्मा की लीला समझकर सतवचन महाराज कहता था और उस अनुसार चलता था परंतु आज इस लेख के द्वारा इन सब प्रश्नों को मैं हमारे पाठकगण के सामने रखता हूँ।

उदाहरण के रूप में लिखता हूँ कि जब मैं रामायण पढ़ता था तब मुझे प्रश्न उठता था कि रामायण तो वही है परंतु विभिन्न लेखकों ने रामायण लिखी, उसमें जो प्रसंग दिखाये वे भिन्न-भिन्न क्यों दिखाये हैं जैसे वाल्मिकी रामायण, तुलसीकृत रामचरित मानस, भवभूति रामायण तथा अभी-अभी 10-15 वर्ष पूर्व गुजराती के लेखक श्री दिनकर जोशी के द्वारा लिखित रामायण। इन सब में अलग-अलग प्रसंग दिखाये हैं। जैसे वाल्मिकी रामायण में सीता स्वयंवर नहीं दिखाया है और तुलसीदास रचित रामायण में यह दिखाया है। वाल्मिकी रामायण में लिखा है कि जब पंचवटी में सीता के पास ब्राह्मण के रूप में रावण जाता है तब पहली बार सीता को देखता है और उसमें अहिरावण व महिरावण का प्रसंग नहीं दिखाया है परंतु अन्य रामायण जो लिखे गये हैं उनमें कुछ अन्य प्रसंग बताये हैं और यह प्रसंग नहीं बताया है। तब मैंने एक पंडित से पूछा कि अलग-अलग रामायण में कुछ प्रसंग अलग-अलग क्यों हैं? उन्होंने कहा कि रामायण तो वही है परंतु

समयानुसार प्रसंगों में परिवर्तन हुआ है। जब मैंने यही प्रश्न दूसरे पंडित को पूछा तो उन्होंने कहा कि प्रसंग तो सब एक जैसे ही हैं परंतु जिसको जो प्रसंग ज्यादा आवश्यक लगा उसने उस प्रसंग को महत्व दिया। अन्य को वह प्रसंग इतना प्रभावशाली नहीं लगा तो उन्होंने उसे प्रभावी तरीके से नहीं लिखा। जैसे घर में भोजन तो एक ही बनता है परंतु किसी को कुछ, तो किसी को कुछ पसंद आता है इसी प्रकार रामायण के लेखकों ने प्रसंगों को विविध प्रकार से वर्णित किया है।

ऐसे ही एक पंडित के साथ मेरी बात हुई तो उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ वाले कैसे कहते हैं कि कलियुग का अंत नजदीक है जबकि शास्त्रों में लिखा गया है कि कलियुग अभी बच्चा है! तब मैंने उस पंडित से पूछा कि जैसे मैं आपको मेरे पिता की लिखी आत्मकथा देता हूँ जिसमें लिखा है कि रमेश अब 5 साल का बच्चा है और मैं कहता हूँ कि मैं वही 5 साल वाला रमेश बच्चा हूँ, तो आप यह बात मानेंगे? तब पंडित जी ने कहा कि मैं यह मान सकता हूँ कि आप जब 5 साल के बच्चे थे तब आपके पिता ने यह आत्मकथा लिखी, कल नहीं लिखी थी अर्थात् वर्तमान समय और लिखने के समय में इतना समय बीता इसलिए जरूर आप बड़े हुए होंगे। तब पंडित जी से मैंने पूछा कि कितने ग्रंथों में लिखा है कि कलियुग अभी बच्चा है? उन्होंने बताया कि 8-10 ग्रंथों में लिखा है कि कलियुग अभी बच्चा है। तब मैंने कहा कि जब ग्रंथ लिखे गये तब कलियुग बच्चा था, इसका अर्थ यह नहीं कि ये शास्त्र कल लिखे गये हैं और आज आप इन्हें पढ़ रहे हैं। ग्रंथों को लिखने और हमारे पढ़ने के समय में बहुत अंतर हो गया है तो कैसे कहते हैं कि कलियुग अभी बच्चा है? जरूर बच्चे के बदले कलियुग भी अभी जवान या वृद्ध हुआ होगा।

फिर मैंने दूसरा प्रश्न किया कि आप कैसे कह सकते हैं कि शास्त्र अनादि हैं अर्थात् सृष्टि के आदि से हैं? क्योंकि मैं अगर आपको कहूँ कि मेरे पिताजी शाश्वत हैं, अविनाशी हैं तो आप मानेंगे? तब पंडित जी ने कहा कि नहीं, मैं नहीं मान सकता हूँ क्योंकि आत्मकथा में लिखा है उस अनुसार रमेश जब 5 साल का था तब आत्मकथा लिखी गई इसलिए वह शाश्वत और अविनाशी नहीं है। इसी प्रकार शास्त्रों की रचना उस समय हुई जब कलियुग बच्चा था। ब्रह्माकुमारीज़ वाले कहते हैं कि सतयुग, त्रेतायुग में शास्त्रों की जरूरत नहीं होती है और द्वापरयुग की शुरूआत से भक्ति शुरू हुई और फिर बाद में शास्त्र बने। आपके हिसाब से कलियुग के आरंभ में परंतु ब्रह्माकुमारीज के अनुसार द्वापरयुग से शास्त्र लिखे गये, तो कौन-सी बात सत्य है? द्वापरयुग में शास्त्र लिखे गये या कलियुग में लिखे गये?

आज हमने इन प्रश्नों का वर्णन इस लेख में इसलिए किया है कि यह ड्रामा सत्य है और इस ड्रामा में हमारा पार्ट भी अविनाशी और सत्य है। जैसे अनेक बार यह सृष्टि का चक्र फिरता है वैसे सदा फिरता रहेगा। इसके लिए मैंने मातेश्वरी जी से प्रश्न पूछा था कि यह ड्रामा अब तक कितनी बार चक्र के रूप में घूमा है तो मातेश्वरी जी ने बहुत ही सुन्दर जवाब दिया कि अगर मैं कहूँ कि यह चक्र 185 बार घूमा है तो अब इस चक्र की 186वीं बारी है घूमने की। फिर जो ड्रामा के बारे में कहते हैं कि यह हूबहू रिपीट होता है, वह नहीं कह सकते अर्थात् इस ड्रामा को कोई संख्या के बंधन में बांध नहीं सकता, यह ड्रामा संख्या के बंधन से परे है।

इसलिए मैं हमारे विद्वान पाठकगण के समक्ष शास्त्रों की बातें रख रहा हूँ कि आप खुद ही शास्त्रों की इन बातों पर विचार करके निर्णय कीजिए कि ड्रामा सत्य है या शास्त्रों में जैसे लिखा है कि ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या, वह सत्य है? अगर सृष्टि मिथ्या है तो हम सभी भी मिथ्या हैं। विचार करें कि हम सत्य हैं या मिथ्या हैं और जिस जगत में हम रह रहे हैं, यह सृष्टि चक्र घूमता रहता है, क्या यह भी मिथ्या है? मैंने बाबा के ज्ञान के आधार पर यह बताया कि ड्रामा सत्य है और उस आधार पर यह लेख लिखा है। क्या सत्य है और क्या मान्यता है, उस प्रश्न का उत्तर आपको देना है।

❖

सर्व सम्बन्धों की मीठी सैक्रीन
शिवबाबा

ब्रह्माकुमार हेमंत, शांतिवन (आबूरोड)

जैसे हृदय में रक्त का महत्व होता है, ऐसे ही जीवन में मधुर, मजबूत, घनिष्ठ सम्बन्धों का महत्व है। सम्बन्धहीन जीवन तो नीर बिन मीन (जल बिन मछली) समान है। रिश्ता चाहे खून का हो या जोड़ा हुआ, जो संतोष से भर दे, आनंद की अनुभूति करा दे, मन को तृप्ति दिला दे, वही जीवन को सार्थक बनाता है। प्यार बरसाने वाले व सुख लुटाने वाले सम्बन्धी साथ हों तो जीवनयात्रा सुगमता से सम्पन्न हो जाती है।

परमात्मा ही हैं दुख-भंजक

यूँ तो संसार में जन्म के साथ अनेक रिश्ते बनते हैं और यथाशक्ति प्राप्ति भी करवाते हैं। माता के वात्सल्य का स्पर्श शिशु को स्नेहामृत का पान कराता है। पिता का प्यार छत्रछाया बन रक्षा करता है तथा वर्से का हक दे समर्थ बनाता है। भाई सहयोग के हाथ बढ़ाता है। मित्र दिल की बात सुन हल्का कर देता है। शिक्षक की शिक्षा जीवनपथ पर चलना सिखाती है व पद प्राप्त करवाती है। पति (वा पत्नी) जीवनरथ का पहिया बन सुख-समृद्धि को गति देता है। गुरु, बुद्धि के हाथों ज्ञान-दीप दे सत्कर्म की राह पर चलने का मंत्र फूंकता है। जिंदगी की शाम होती तो थके तन व मन का पुत्र सहारा बनता है

इन सब रिश्तों के होते भी मानव उस दीनदयाल, दीनबंधु, दयासिंधु प्रभु को याद करता है क्योंकि वही एक परमात्मा दु:ख-भंजक व सुख-सृजक हैं। वही अपार प्यार बरसाने वाले, अथाह सुख लुटाने वाले, असीम शांति देने वाले, स्नेह-सुख-शांति के सागर हैं। पर उनकी भेंट में अल्प स्नेह-सुख देने वाले शरीरधारी तो गर्मी में सूखने वाले सरोवर-सरिता समान हैं।

जो सदा देते ही देते हैं

जो हर सम्बंध की डोर में सहज बंध जाते हैं पर जिन्हें देह का धागा व समय की धारा बांधती नहीं, जो दिल से याद करने पर पल भर में हाजिर हो जाते हैं, सर्व सम्बंधों का सुख दिनरात लुटाते हैं, बस देते ही देते हैं, बदले में कुछ मांगते नहीं, जिन्हें पाने पर और कुछ पाना शेष नहीं रह जाता, ऐसे कोई हैं तो बस एक परमप्रिय परमात्मा, प्यारे प्रभु। सर्व सम्बन्धों की मीठी सैक्रीन भोलाभण्डारी शिव परमात्मा हैं जिन्हें जन्म-जन्म भक्तिकाल में त्वमेव माताच पिता त्वमेव .....' कहकर पुकारा। अनेक भक्तों ने उन्हें अनेक सम्बन्धों से याद किया और अपनी भावनानुसार उनकी छवि बनाई। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने उनसे महाकाली जगतजननी के रूप में माँ का सम्बंध जोड़ा, भक्तशिरोमणि मीरा ने गिरधर गोपाल को परमपुरुष परमात्मा मान पति का नाता जोड़ा, सुदामा ने उनको मित्र बनाया, अर्जुन के लिए गीता ज्ञान दाता सद्‌गुरु व शिक्षक सिध्द हुए, द्रौपदी ने बंधु के रूप में पुकारा, प्रह्लाद ने उन्हें पिता बनाया।

साक्षात्कार नहीं, साक्षात्

बच्चे का बालहठ पूरा करने के लिए पिता घोड़ा बन जाता है, ऐसे ही भक्तवत्सलम् भगवान, भक्तों की कामना पूरी करने के लिए देवता रूप के साक्षात्कार कराते रहे हैं। पर अब साक्षात्कार से नहीं किन्तु साक्षात् ब्रह्मातन में अवतरित हो वो स्नेहसागर सर्व सम्बंधों का सुख लुटा रहे हैं। इंद्रिय सुखों से परे अतीन्द्रिय सुख का अमृतपान करा रहे हैं। नि:स्वार्थ स्नेह बरसा रहे हैं। वो भले ही देह से न्यारे, अशरीरी, विदेही हैं पर अनुभूति ऐसी कराते हैं, जो हृदयवीणा झंकृत हो गा उठती है, **''तुम तो यहीं कहीं बाबा, मेरे आसपास हो, आते नजर नहीं पर मेरे साथ-साथ हो।''** लाखों-करोड़ों दिलों की धड़कनें उसके प्रेमप्रतापों का जलवा देख चुकी हैं।

सच्चे दिल से कह दो 'मेरे' तो हो जाएंगे 'तुम्हारे'

हे आत्मन, वो हसीन मुसाफिर शिव धरा पर उतर आये हैं, हजारों बाँहें पसारे तुम्हें दिल से दुलारने, तुम पर प्यार की बरसात करने, मोहब्बत के माणिक-मोतियों से तुम्हारा शृंगार करने, स्नेह की शीतल बूंदों की बौछार से तन-मन की तपत मिटाने। वो माता-मित्र, पिता-पुत्र, साजन, शिक्षक, सतगुरु, बंधु, रक्षक आदि के नाना सम्बन्धों का स्वाद चखाने के लिए बेकरार हैं। बस एक बार उन्हें सच्चे दिल से कह दो 'मेरे' तो हो जायेंगे वो सदा के लिए 'तुम्हारे'। हर पल साथ निभायेंगे, ज़िंदगी का साया बनेंगे व तुम्हें कोहिनूर बनाकर सिर के ताज में जड़ेंगे। 'तुम मातपिता हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा ते सुख घनेरे', यह गीत, उन्हीं के सम्बन्ध सुख की गाथा है। सर्व सम्बन्धों की मीठी सैक्रीन शिवसंग सम्बंध जोड़ना तो सुखसागर में समाना है।

भगवान रीझते हैं सच्चे दिल पर

इस संदर्भ में भोलू की खुदादोस्त से दोस्ती की दास्तान बड़ी मार्मिक है। प्रतिदिन भोलू भेड़-बकरियाँ चराने निकल पड़ता। मखमली घास में उन्हें छोड़ देता व मस्ती से वन में विचरण करता। खुले आसमान में निहारते, नीली छतरी वाले से मनमौजी बातों में मशगूल होकर कहता, 'ओ खुदादोस्त, जरा जमीं पे तो आओ व मेरे साथ खेलो, मैं तुम्हें हरीभरी वादियों में घुमाऊँगा, मुरली की मधुर तान से बहलाऊँगा' आदि-आदि। एक दिन रास्ते गुजरते पंडित जी ने ऊपर वाले से उसका वार्तालाप सुन पूछा, 'अ बच्चे, क्या बड़बड़ा रहे हो।' भोलेपन से भोलू बोला, 'मैं तो खुदादोस्त से बातें कर रहा हूँ।' पंडित जी ने डांटते हुए कहा, 'भगवान से ऐसे थोड़े ही बातें की जाती हैं, चल मैं तुझे बातें करना सिखाता हूँ' और पंडित जी संस्कृत के श्लोक रटाकर चल दिये। पर बेचारा भोलू मंत्र रटते-रटते मूंझकर मायूस हो गया। इधर रात को पंडित जी के सपने में भगवान जी आये व बोले, 'आज तुमने बड़ी भूल की है', पंडित जी ने कहा, 'नहीं भगवन्, मैंने तो पुण्य का काम किया है, एक बच्चे को आपसे बातें करना सिखाया है।' भगवान जी बोले, 'तुमने तो उसकी बोलती ही बंद कर दी, सभी अपना ही दु:खड़ा सुनाते हैं पर भोलू दिल की बातों से बहलाता था। अब मैं कभी भी उसकी वो मीठी-प्यारी तोतली बातें सुन नहीं पाऊँगा।' कहानी का सार यही है कि भगवान को विद्वतापूर्ण श्लोकों से नहीं बल्कि साफ़-सच्चे दिल की बातों से रिझाया जा सकता है।

जीवन में प्राप्ति कराने वाले मुख्य आठ संबंध हैं – माता, पिता, सतगुरु, भ्राता, शिक्षक, मित्र, साजन, पुत्र। वर्तमान हीरेतुल्य पुरुषोत्तम संगमयुग में सर्वशक्तिवान इन सभी सम्बंधों से अविनाशी प्राप्तियाँ करा रहे हैं। परमपिता बन स्वर्गिक सुख का वर्सा, शिक्षक रूप से ऊँच पद, सतगुरु बन मुक्ति-जीवनमुक्ति का वरदान देते हैं। परममाता बन वात्सल्य व नि:स्वार्थ प्यार लुटाते हैं। बंधु बन सहयोग, सखा बन साथ और पुत्र रूप में सहारा देते हैं। साजन बन शृंगार करते हैं। इन सम्बंधों की विस्तृत, यथार्थ ज्ञानयुक्त समझ परमसुखों के द्वार खोलती है।

परममाता: माँ, बच्चे को प्यार-दुलार देती, संतान की हर हरकत सहकर, गलती को क्षमा करती तथा चरित्र निर्माण करती है। ऐसे ही परमात्मा भी बिना शर्त अपार प्यार व दिल का दुलार दे, आत्मा बच्चे को सही समझ दे समझदार यानि देवता बनाते हैं। उनसे निर्विकारी बनने का ज्ञान तथा प्रेम, क्षमा, करुणा जैसे गुण एवम् सहनशक्ति मिलती है। जैसे छेनी और हथौड़े की मार सहकर पत्थर पूज्यनीय बनता है, ऐसे ही परमात्मा माँ सहनशीलता व प्रेम से चरित्रवान और पूज्यनीय देव बनाती हैं।

परमपिता: जैसे दैहिक पिता, आज्ञाकारी पुत्र को चल-अचल सम्पत्ति का वारिस बनाता है, ऐसे ही, जो भगवान शिव से परमपिता का नाता जोड़, आज्ञाकारी आत्मिक पुत्र बन 'पवित्र बनो-योगी बनो' की आज्ञा का पालन करता है, वो ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार स्वरूप वर्तमान में ज्ञान, गुण, शक्ति पाता है, विकारों को जीतकर श्रेष्ठ कर्म करता है और भविष्य में 21 जन्म स्वर्गिक स्वराज्य का वर्सा (स्वर्ग

का वर्सा) पाता है।

परमशिक्षक: शिक्षक छात्र को शिक्षा दे डिग्री से ऊंच पद देता है। ऐसे ही परमशिक्षक परमात्मा शिव राजयोग व ईश्वरीय ज्ञान की अनुपम शिक्षा से सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम व डबल अहिंसक की दैवी डिग्री दिलाते हैं, जिससे नारी से विश्व महारानी श्री लक्ष्मी व नर से विश्व महाराजन श्री नारायण के सर्वोच्च पद की प्राप्ति होती है।

परमसद्गुरु: जैसे देहधारी गुरु 'पुत्रवान, धनवान, आयुष्वान भव' का वरदान देते हैं, ऐसे ही परमसद्गुरु शिवबाबा भी मुक्ति व जीवनमुक्ति का वरदान दे अमर भव का आशीर्वाद देते हैं। परमसद्गुरु से कर्म की गुह्य गति का ज्ञान, विवेकशीलता, स्थिरता, शांति आदि गुण तथा निर्णय करने की शक्ति मिलती है। वे ही श्रेष्ठ आचरण की मत (श्रीमत) देते हैं।

सखा : दिल पर बोझ हो तो दोस्त याद आता है। जो दूजे को बता न सकें वो केवल मित्र ही सुनता व हल्का करता है। ऐसे ही खुदा दोस्त दिल की बातें सुनने के लिए सदा हाजिर रहते हैं और बोझ को हल्का करते हैं। परममित्र रूप में वे प्रतिकूलता में प्रसन्न रहने की शक्ति एवं सामना करने की शक्ति देते हैं। विकराल विपदा के समय अपनी शक्तियों से साथ देते हैं।

बंधु: भाई धर्मसंकट में सहयोग का हाथ बढ़ाता व सुरक्षा का वादा निभाता है। परमप्रिय परमात्मा भी दिल के बुलावे पर भ्राता बन परिस्थिति का पहाड़ उठाने में सहयोग के हाथ आगे बढ़ाते हैं।

पुत्र : वृद्धावस्था में तन-मन दुर्बल होने पर बेटा आधार देता है व पिता की पालना का कर्ज चुकाता है। संगमयुग में एक जन्म परमात्मा को पुत्र मान उसके अर्थ तन-मन-धन सफल करने पर वो आज्ञाकारी पुत्र शिव 21 जन्म के लिए सुख का सहारा बनते हैं। पुत्र रूप में मनोविकारों के वार से बचने का ज्ञान, हर्षितमुखता जैसे सद्गुण एवं विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति देते हैं। दिल से मेरा कहने पर हर काज संवारने का वचन निभाते हैं एवं बच्चा बन बहलाते भी हैं।

साजन : साजन, सजनी के लिए सौभाग्य-सुहाग का सुंदर शृंगार होता है। वो शिवसाजन, पतिपरमेश्वर बन सौभाग्य तो क्या परंतु पद्मापद्म सौभाग्य का सुहाग देकर सर्वगुण सम्पन्नता से सजाते हैं। पति रूप में वह आत्मा सजनी को आंतरिक सौंदर्य, पवित्रता, अमरता जैसे श्रेष्ठ गुणों से एवं समेटने की शक्ति से भरपूर कर देते हैं। परमात्मा पति रूप में अविनाशी सौभाग्य दे सुख से दामन भरते हैं व सदाकाल के लिए रोने से मुक्त करते हैं।

इनके अलावा परमात्मा पिता, काम, क्रोधादि मनोरोगों से मुक्ति दिलाने वाले वैद्यनाथ हैं, पापकर्मों से बचाने वाले धर्मराज हैं। सर्जन व धर्मराज – ये दो सम्बंध भी पुरुषार्थी को महान मदद करते हैं।

जो पुरुषार्थी परमात्मा से सर्व सम्बन्ध जोड़ता है, वो देहधारियों के भरमाने व भटकाने वाले अल्प सुखदाई सम्बंधों में फँसता नहीं। परंतु यदि ऊपर वर्णित सर्व सम्बंधों में से प्रभु से एक भी रिश्ता ना जोड़ा, तो वही सम्बंध मोहजनित मायावी रूप धारण कर याद की यात्रा में बाधा बनता है। दैहिक सम्बंधों की स्मृतियाँ लगाव, झुकाव, प्रभाव, दबाव तथा ईर्ष्या, नफरत, द्वेष, घृणा पैदा करती हैं। विदेही, अशरीरी, निराकारी परमात्म सम्बंधों की प्यार भरी यादें पाप से परे ले जाती हैं, निरन्तर स्नेह की रसधारा में डुबोये रखती हैं व अखण्ड, अटल, अविनाशी अतीन्द्रिय सुख का अधिकारी बनाती हैं। तो हे आत्मन, अब देर किस बात की, आओ, ऐसे हसीन मुसाफिर परमात्मा शिव से सर्व सम्बंध निभायें व स्वयं को धन्य, धन्य बनायें! ❖

25 नवम्बर विश्व माँसाहार निषेध दिवस पर विशेष ...

हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई, जीवों पर दया करो मेरे भाई

ब्रह्माकुमार दिनेश, हाथरस

जब कोई माँसाहारी जानवर किसी गाँव में आकर मनुष्यों पर हमला बोल देता है या बच्चों को उठा ले जाता है तो लोग उसे वहशी कहते हैं लेकिन शाकाहारी जैव संरचना वाला और संसार का सबसे बुद्धिमान प्राणी होने का दावा करने वाला मनुष्य निरीह बेजुबानों को अपने पेट में समाने में देर नहीं करता, फिर उसे क्या कहा जाये!

मनुष्यों की भ्रान्तियाँ आहार के विषय में

आइये, कुछ ऐसी बातों पर विचार करें जो मनुष्यों के तर्क कम और भ्रांति अधिक हैं। इनमें सबसे पहली बात कही जाती है कि माँस खाने से मनुष्य में ताकत की वृद्धि होती है परन्तु इस तर्क में जान नहीं है क्योंकि हम पाते हैं, भारत के विश्व विजेता चैम्पियन पहलवान महाबली 'खली' (दिलीप सिंह राणा) स्वयं शुद्ध शाकाहारी हैं। भारत के कितने ही पहलवान बादाम, अखरोट आदि खाकर कुश्ती लड़ते हैं। माँसाहार से शाकाहार या मेवाओं का सेवन अधिक महंगा नहीं है। जानवरों में भी हाथी, घोड़ा, बैल, ऊँट आदि जितने भी ताकतवर, भार लादने वाले या परिश्रमी पशु हैं, सभी शाकाहारी हैं।

दूसरा तर्क है कि अगर माँसाहार न किया जाये तो संसार में बूढ़े, अयोग्य गाय, भैंस, बैल आदि पशुओं की संख्या बढ़ जायेगी। यह कहना तो मानवता का खुला मखौल है कि जब तक कोई हमारे स्वार्थ की पूर्ति करता है तो काम का है, नहीं तो मारने योग्य है।

तीसरी बात कही जाती है कि अगर माँसाहार न किया जाये तो अन्न की कमी पड़ जायेगी परंतु अन्न तो जरूरत से अधिक उत्पादित हो रहा है।

चौथा तर्क है कि माँस में प्रोटीन अधिक होता है परन्तु भोजन विशेषज्ञों के मुताबिक मटर, सोयाबीन, दालों में माँस से कम प्रोटीन नहीं होता। भोजन विशेषज्ञों के अनुसार तो उच्च प्रोटीन युक्त भोजन ही व्यर्थ है क्योंकि शरीर में प्रोटीन का संचय कहीं नहीं होता, यह नाइट्रोजन आदि उत्पादों के रूप में गुर्दों के माध्यम से बाहर निकलता है जिससे गुर्दों पर भी अतिरिक्त भार पड़ता है।

पाँचवीं बात कही जाती है कि जिस प्रकार का पर्यावरण होता है उसी प्रकार का मनुष्य जीवन ढालना पड़ता है अत: ठण्डे इलाकों में रहने वालों को तो माँसाहार करना ही होगा। लेकिन मनुष्य का शरीर जिस वातावरण में पैदा होता है उसी प्रकार की क्षमतायें अपने अन्दर विकसित कर लेता है। बर्फीले इलाकों में ऋषि, मुनि नंगे बदन तपस्या करते थे तो जरूर शरीर की क्षमताओं को उसी वातावरण के अनुसार ही ढाल पाते होंगे। ठण्डे इलाकों में उत्पादित होने वाले खाद्य पदार्थ और जड़ी-बूटियाँ आदि शरीर को वह ताप और ऊर्जा प्रदान करने में सहायक होते हैं जिससे ठण्ड में भी पसीने छूटते हैं।

आदिकाल में देवी-देवताएँ शुद्ध शाकाहारी थे

पश्चिमी देशों के लेखकों के तर्क हैं कि आदिकाल से ही मानव हथियारों, पत्थरों आदि से जानवरों को मारकर खाया करता था परन्तु पूर्वी लेखकों और भारतीय शास्त्रों का मत है कि आदिकाल में तो यह पृथ्वी फल, फूलों से सुसज्जित थी, यह जन्नत, स्वर्ग, सतयुग, खुदा का बगीचा थी जिसमें दैवी सद्‌गुणों से सम्पन्न देवताओं का वास था, जिनकी पहचान जड़ चित्रों, मूर्तियों के रूप में आज हमारे सम्मुख है, जहाँ गाय और शेर भी एक ही घाट पर पानी पीते थे। क्या श्री राम, क्या श्री कृष्ण या अन्य किसी दैवी प्रवृत्ति

वाले द्वारा कहीं माँस खाने का उल्लेख मिलता है? कई लोगों का मत है कि मनुष्य का पूर्वज बंदर था, यह मान भी लिया जाये तो भी बंदर तो शाकाहारी प्राणी होता है फिर उसकी विकसित सभ्य प्रजाति मनुष्य माँसाहारी कैसे हो सकती है? जिन लोगों ने उपरोक्त परिकल्पनायें की हैं वे या तो स्वयं माँसाहारी होने के नाते यह भी नहीं सोच सकते कि बिना माँसाहार के मनुष्य जीवित भी रह सकता है।

मानव की शारीरिक संरचना माँस भक्षण के विरुद्ध

शारीरिक संरचना को देखें तो माँसभक्षी जीवों के दाँत नुकीले होते हैं, पंजे मजबूत और धारयुक्त होते हैं जो माँस को फाड़ सकें। इसके विपरीत शाकाहारी के पंजे केवल शाकाहार के उपयुक्त होते हैं। माँसाहारी जीव बिना चबाये ही साबुत मांस को निगल जाते हैं अत: उनका निचला जबड़ा सिर्फ ऊपर-नीचे चलता है जबकि शाकाहारी का जबड़ा सभी दिशाओं में गतिमान होता है। माँसाहारियों की जीभ बेहद खुरदुरी होती है और वे पानी पीने के लिए जीभ बाहर निकालते हैं जबकि शाकाहारी इस काम के लिए होंठों का उपयोग करते हैं। माँस खाने वाले जीवों की आँतें छोटी होती हैं क्योंकि माँस का उत्सर्जन खराब होने से पूर्व करना होता है जबकि शाकाहारियों की आँतें बहुत लम्बी होती हैं जिससे कि शाकाहार को पचने में पर्याप्त समय मिल सके।

धार्मिक ग्रन्थों द्वारा करुणा, अहिंसा का उपदेश

न तो वेदांग, उपनिषद्, श्रीमद्भगवद्गीता, न ही सिक्खों का पवित्र गुरुग्रन्थ साहिब, न ही ईसाई धर्म की पवित्र बाइबिल और प्रारम्भिक पुस्तक क्लेमेन्टाइन होमिलीज के उपदेश, न ही मुहम्मद साहिब की पाक कुरान और न ही संसार के अनेक पवित्र ग्रन्थ कभी भी भोजन के लिए पशुओं का माँस और धार्मिक भावनाओं की पूर्ति के लिए पशुओं की बलि देना स्वीकार करते हैं। हिन्दुओं का तो हर पवित्र ग्रन्थ सत्य, अहिंसा की बात करता है। बौद्ध और जैन पंथों में सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि का बाहुल्य पाया जाता है। गुरुनानक देव जी ने कहा है,

''असंख गलवढ़ हतिआ कमाहि,
असंख पापी पापु करि जाहिं।
असंख कुड़िआर कूड़े फिराहि,
असंख मलेछ मलु भखि खाहि।।''

इनमें गलाकाट कमाई और गंद खाने वालों का उल्लेख मिलता है, जो वाणी इस प्रकार का सद्संदेश देती हो वह माँसाहार की प्रेरणा कैसे दे सकती है? ईसाई पंथ के प्रारम्भिक पादरियों में से क्लेमेन्ट का नाम उल्लेखनीय है। क्लेमेन्टाइन होमिलीज, जो ईसाइयों का प्रारम्भिक दस्तावेज है, में लिखा है, ''अपने शरीर को पशुओं का कब्रिस्तान बनाने से बेहतर है कि भूखे रह लिया जाये।'' यूरोप के विद्वान जार्ज बर्नार्ड शॉ का कथन प्रसिद्ध है, ''मैं अपने पेट को कब्रिस्तान क्यों बनाऊं जबकि परमात्मा ने खाने के लिए अनेक सुन्दर वस्तुएँ प्रदान की हैं।'' इस्लाम में भी पशु प्रेम के उदाहरण देखे गये हैं यथा, कुरान और हदीस में जानवरों के प्रति क्रूरता की निंदा करते हुए सज़ा का प्रावधान किया गया है। पैगम्बर के अनुसार, एक औरत को मरने के बाद सिर्फ इसलिए जहन्नुम में जाना पड़ा क्योंकि उसने एक बिल्ली को कैद करके रखा था और उसे कुछ खाने को नहीं दिया था। पशुओं के लिए पशुशालायें, नहर आदि खोदने के सैकड़ों उल्लेख इस्लाम में पाये जाते हैं।

कामनापूर्ति के लिए क्रूरता

कामना की पूर्ति के लिए असम की कामाख्या शक्तिपीठ पर हजारों पशुओं और पक्षियों की सरेआम बलि, कोलकाता की कालीबाड़ी में हजारों बकरों की बलि, कर्नाटक में मकर संक्रान्ति के दिन लोमड़ियों को पीटा, छेदा जाना फिर आग के हवाले कर देना, महाराष्ट्र में नागपंचमी के दिन लगभग 2 लाख सांपों का मारा जाना, बरेली का गोवर्धन के दिन लगने वाला सूअर वध मेला हो या ईद के मौके पर लाखों बकरों की बलि, काठमांडू और

भारत के पूर्वी प्रदेशों में भैसों की बलि, ये निरीह बेजुबान पशुओं की पीड़ा की अन्तहीन गाथा है। एक समाचार-पत्र के मुताबिक बकरीद से दो दिन पूर्व आगरा में ही 72 लाख रुपयों के बकरों की खरीदारी हुई। कुछ दिन पूर्व लीबिया के तानाशाह को विद्रोहियों द्वारा घेर लिया गया तो वह मौत को सामने देखकर गिड़गिड़ाने लगा कि मुझे गोली मत मारो। मनुष्य तो कह सकता है कि मत मारो परन्तु वे जो बेजुबान हैं, उन्हें जब मारने का यत्न किया जाता है तो उनके अन्त:करण से किस प्रकार का आर्तनाद गूंजता होगा! जब किसी बकरे या मुर्गे को किसी कसाई के पास ले जाया जाता है तो वह पहले ही भाप जाता है और भागने की कोशिश करता है, भय के कारण कितना चिल्लाता, चीखता है जैसे कि वेदनापूर्ण विनय करता है कि उसे न मारा जाये। चीन में तो एक विशेष किस्म के जूते बनाने के लिए जीवित जानवर की खाल खींच कर उसे मरने के लिए फेंक दिया जाता है। इन हृदय विदारक दृश्यों को देखकर किसी मनुष्य के मन में न प्रेम, न दया, न उदारता, न करुणा, न सहायता और न ही न्याय के भाव पैदा हों, ऐसे मनुष्य को भला क्या कहा जाये! और उन्हें क्या संज्ञा दी जाये जो अपने चन्द मिनटों के जिह्वा के स्वाद के लिए दूसरे के पेट पर छुरा या गर्दन पर चाकू चलवा सकते हैं, उनसे जीवन-मूल्यों, व्यवहार और व्यापार में श्रेष्ठ आचरण या आचार संहिता की आशा कैसे की जा सकती है? किसी भी प्रकार की बलि, कुर्बानी का तात्पर्य मनुष्य के अहम् की बलि और मैं-पन की कुर्बानी है। निरीह की आह से सींची गई फुलवारी कभी फलीभूत कैसे हो सकती है!

हमारा आशय किसी भी धर्म, सम्प्रदाय, मजहब, पन्थ की धार्मिक भावनाओं की आलोचना या उनको हानि पहुँचाना नहीं है। हम कहना चाहेंगे कि माँसाहार या शाकाहार का प्रश्न नहीं, प्रश्न तो इस बात का है कि मानवीयता क्या कहती है? आध्यात्मिक और धार्मिक पक्ष क्या कहते हैं? शरीर विज्ञान के अनुसार हमारे स्वास्थ्य का पक्ष क्या कहता है और पशुओं के प्रति क्रूरता और मानवीय सहनशीलता हमें क्या जवाब देती है? हम स्वयं को क्रोध, उत्तेजना आदि से मुक्त रखकर संयमी, निर्विकारी, दैवी संस्कृति के संरक्षक बनाना चाहते हैं या आसुरियता के संरक्षक बनना चाहते हैं? ❖

मिली एक नई ज़िन्दगी

ब्रह्माकुमार आर.डी.रोहिल्ला, सोनीपत

मुझे पिछले 22 सालों से एनजाइना (कंठदाह) था और हृदय की धमनियाँ ब्लॉक थी। एंजियोप्लास्टी भी करायी लेकिन फिर से ब्लॉक हो गए। मुझे चलने में बहुत दिक्कत होती थी और थोड़ा-सा चलते ही छाती फटने को हो जाती थी। एंजियोग्राफी से पता चला कि ब्लॉकेज ज्यादा हैं, बाईपास सर्जरी करवानी पड़ेगी।

तभी एक ब्रह्माकुमार भाई से मिलना हुआ और उनसे ज्ञात हुआ कि डॉ.सतीश गुप्ता ने, जो कि ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, शान्तिवन (आबू रोड) में हैं, एक Three Dimentional Heart Care के नाम से आविष्कार किया है जिससे हृदय की धमनियाँ बिना किसी ऑपरेशन के खुल जाती हैं। मैंने उनसे संपर्क किया, उन्होंने मुझे शान्तिवन बुला लिया, एक सप्ताह वहाँ रखा और अपने जादुई आविष्कार – राजयोग, सात्विक भोजन, प्रात:कालीन और सायंकालीन सैर के बारे में समझाया। मैंने इस सारे कार्यक्रम को पूरी तरह से फॉलो किया और तीन महीने में सारे ब्लॉकेज खुल गए।

मैं डॉ.सतीश गुप्ता और ब्रह्माकुमारी संस्था का तहेदिल से शुक्रगुजार हूँ जिन्होंने मुझे नई ज़िन्दगी दी है और जीवन जीने की कला सिखा कर बेगमपुर का बादशाह बना दिया है। मेरे जीवन से तनाव, उत्तेजना, गुस्सा, चिन्ता, भय, उदासी सदा के लिये दूर कर दिए हैं। मुझे यह कहते हुए अति प्रसन्नता हो रही है कि हृदयरोग रूपी तूफान मेरे लिए तोहफा बन गया क्योंकि भगवान के करीब लाने के निमित्त यही बना। ❖

शरीर की वृद्धि और रख-रखाव

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

हममें से हरेक आत्मा पाँचों तत्वों का उपभोग शरीर के निर्माण और बढ़ोतरी के लिए करती है। बचपन से लेकर 35 वर्ष की आयु तक शरीर की वृद्धि होती रहती है। जन्म के समय जो शरीर मात्र ढाई कि.ग्रा.का था, 35 साल की आयु तक पहुँचते-पहुँचते यदि 50 कि.ग्राम का हो गया तो यह 47.50 कि.ग्रा.वजन शरीर द्वारा उपभोग की गई प्रकृति के भिन्न-भिन्न तत्वों का ही तो है।

बढ़ते मकान की तरह बढ़ता है शरीर

तीव्र गति से बढ़ते शरीर की तुलना हम तीव्र गति से बन रहे मकान से कर सकते हैं। जब मकान के लिए पिल्लर खड़े किए जाते हैं, दीवारें और फर्श बनाए जाते हैं, तो क्विंटल-दर-क्विंटल रोड़ी, बजरी, सिमेंट, ईंटें, पत्थर, मिट्टी आदि सामान उसमें लगता जाता है। फिर एक ऐसा समय आता है कि मकान पूरी तरह से बनकर तैयार हो जाता है। उसकी सभी दीवारें एक समान मोटी, सभी फर्श एक समान ऊँचाई वाले बड़े सुन्दर दिखते हैं। इस तैयार मकान की देख-रेख, सम्भाल के लिए अब साल या दो साल में चूना या सफेदी या डिस्टेम्पर की जरूरत पड़ती है जो एक मध्यम आकार के कमरे में लगभग 5 कि.ग्रा. के आस-पास ही चाहिए होता है। यदि हम इस मात्रा से ज्यादा भारी मैटिरियल दीवारों पर लगाने की कोशिश करें तो दीवारों का आकार बिगड़ने की सम्भावना रहती है, कहीं मैटिरियल ज्यादा चिपक जाएगा, कहीं कम। यदि वह मैटिरियल दीवार पर न टिक सका तो फर्श पर उसका ढेर लगेगा और फर्शों का भी आकार कहीं ऊँचा, कहीं नीचा हो जाएगा।

बिगड़ने लगता है सन्तुलन

शरीर भी आत्मा का मकान है। मन से तो हम जीवन के अन्तिम श्वास तक युवा रह सकते हैं पर शरीर की 35 या 40 वर्षों तक की अवस्था युवावस्था मानी जाती है। इस

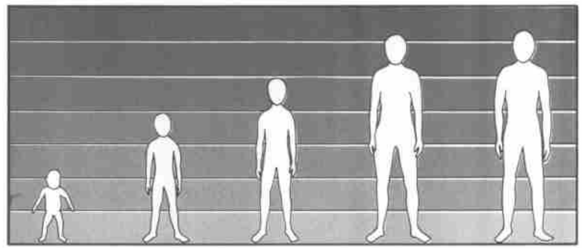

अवस्था के बाद सहज समझ की बात है कि इसे पहले की तरह ज्यादा माल, मैटिरियल (खाद्य पदार्थ) की आवश्यकता नहीं है। बने मकान की टूट-फूट ठीक करने की तरह इस विकसित शरीर को भी टूट-फूट, कमी-कमजोरी ठीक करने के लिए और रोज खर्च होने वाली ऊर्जा की पूर्ति के अनुसार ही भोज्य पदार्थों की जरूरत होती है। यदि इससे ज्यादा पदार्थ इसके लिए प्रयोग किए जाते हैं तो इसका भी आकार बिगड़ने लगता है। प्रकृति ने जिस सन्तुलन से इसे बनाया, वह सन्तुलन विकृत होने लगता है।

देवी-देवता हैं आदि पूर्वज

शरीर के आकार के सम्बन्ध में कइयों के आनुवंशिक कारण होते हैं और कई प्रकार की दवाइयों का प्रयोग भी इसके आकार पर असर डालता है। यह ठीक है परन्तु वास्तव में देखा जाए तो हम श्री लक्ष्मी और श्री नारायण आदि देवी-देवताओं के वंशज हैं, उनका शरीर एकदम सन्तुलित और निरोग दिखाया जाता है। वर्तमान की एक-दो या कुछ अधिक पीढ़ियों पहले के पूर्वजों के शरीरों में भी यदि विकृति आई तो वह भी बाद की विकृति है, मूल विकृति नहीं अत: वंश को याद करें तो हम अपनी तुलना देवी-देवताओं से कर सकते हैं, वे ही आदि पूर्वज हैं।

त्वचा रूपी थैली में भरे हैं हड्डी, माँस, रक्त

शरीर की रचना को यदि देखा जाए तो यह ऐसी है जैसे पतली थैली (त्वचा) के अन्दर हड्डी, माँस, रक्त आदि भरे

हों। थैली भी लचीली है। इसमें भरे मैटिरियल यदि कम हो जाते हैं तो यह थैली सिकुड़ जाती है, ज्यादा हो जाते हैं तो फैल जाती है। दूसरे शब्दों में गुब्बारे वाला हाल है इसका। ज्यादा हवा भरो तो गुब्बारा मोटा हो जाता है, कम हवा भरो तो सिकुड़ जाता है, शरीर रूपी गुब्बारे की हवा है भोज्य पदार्थ। अत: यह हमारे हाथ में है कि हम जब चाहें, ज्यादा भोज्य पदार्थ डालकर इसे फुला लें और जब चाहें भोज्य पदार्थों में कमी करके इसे पिचका लें। कहने का भाव यह नहीं है कि हम फुलाने-पिचकाने में ही लगे रहें, भाव यह है कि हमारी संकल्प शक्ति के आधार पर यह गुब्बारा अपना आकार प्राप्त करता है। ईश्वरीय ज्ञान के आधार से हमें पता चल चुका है कि आत्मा मालिक है और शरीर डायरेक्शन को फालो करने वाला सेवक है।

सवाल पेट का

कहा गया है कि कलियुग के आते-आते अपना पेट भरना भी एक बहुत बड़ा काम बन जाता है। हम देख रहे हैं कि आज चारों ओर जो भागदौड़ है उसके मूल में पेट का सवाल ही है। इस सवाल के साथ गरीब अपने ढंग से और अमीर अपने ढंग से जुड़ा है। गर्मी हो, सर्दी हो, बरसात हो, शरीर बहुत स्वस्थ ना हो, तो भी गरीब को सूर्योदय से पहले घर छोड़ देना पड़ता है, नहीं तो वह अपना और अपने बाल-बच्चों का पेट कैसे भरेगा? सूर्योदय से पहले, अमीर का भी घर से निकलना बहुत जरूरी है इसी पेट की खातिर, ज्यादा बढ़े हुए को थोड़ा छोटा करने के लिए। सवाल दोनों के सामने पेट का ही है। खाली पेट जितना खतरनाक है, बढ़ा हुआ भी कम खतरनाक नहीं है। पेट का आकार बढ़ाने वाली कुछ चीज़ों को यदि हम गरीब की तरफ खिसका दें तो दोनों की समस्याओं का किसी सीमा तक निदान हो सकता है।

पकाये हुए भोज्य पदार्थ दो प्रकार के

हमारे भोज्य-पदार्थों में दो प्रकार की पकी हुई चीजें होती हैं, एक वे जिन्हें हम (या अन्य कोई) अपने हाथों से रसोई में पकाते हैं और दूसरी वे जिन्हें प्रकृति पकाती है। जब कोई भी फल, अपने पूर्ण आकर, रूप, रंग, रस को प्राप्त कर लेता है तो हम कहते हैं, यह पक गया। प्रकृति ने उसे पका दिया। इन दोनों क्रियाओं में बहुत भारी अन्तर है। जिन्हें प्रकृति पकाती है वे पौष्टिक तत्वों से भरपूर होते हैं और जिन्हें मानव पकाता है, उनके पौष्टिक तत्व इस क्रिया से नष्ट हो जाते हैं। हमें स्वयं निर्णय करना है कि हमें मानव का पकाया हुआ खाना है या प्रकृति का पकाया हुआ। दोनों में से शरीर के लिए कौन-सा ज्यादा अनुकूल है। अपने शरीर से हमें बहुत प्यार है, इस प्यार का इज़हार यही है कि इसे हम स्वस्थ, दीर्घायु, निरोग, फुर्त और हल्का रखें। ये सभी गुण प्रकृति के पकाए पदार्थों को ज्यादा मात्रा में प्रयोग करने से स्वत: आते हैं।

दो प्रकार के रस

दो प्रकार के रस हैं, आत्मिक रस (आनन्द) और जिह्वारस। फरिश्ता बनने के पुरुषार्थ में हमें दोनों में से किसे ऊपर रखना है। दोनों साथ-साथ नहीं हो सकते क्योंकि अनुभव करने वाली आत्मा एक है। जब आत्मा, आत्मिक स्वरूप में टिकने का, आत्मिक स्वरूप के चिन्तन का आनन्द लेती है, उसमें खो जाती है तो जिह्वारस से उपराम और न्यारी हो जाती है। इस आत्मिक स्थिति में, मुख खाने का, भोज्य पदार्थों को पेट में भरने का कार्य करता रहता है पर आत्मा, परमात्म आनन्द में खोई रहती है। दूसरा यह है कि यदि आत्मा जिह्वा के रस की तरफ आकर्षित है तो उस समय वह स्वयं के स्वरूप को और उस स्वरूपजनित आनन्द को भी भूली हुई होती है। वह जीभरस की स्मृति में, उसे जुटाने में, उसे भोग लेने के बाद उसके स्मरण और वर्णन में और पुन: पाने के चिन्तन में लगी रहती है। फलस्वरूप स्थूल शरीर की पालना जरूरत से ज्यादा होती रहती है और आत्मिक स्वरूप की अनुभूति आवश्यकता से कम हो पाती है। फरिश्ता बनने के पुरुषार्थियों को अब इसे बदलना है। अपने समय और संकल्पों को आत्म-आनन्द और आत्म-तेज बढ़ाने में लगाना है। यही बाप समान बनने का मार्ग है, प्रकृति को सकाश देने का मार्ग है।

प्रकृति के किसी भी तत्व का व्यर्थ प्रयोग क्यों किया जाए? बिना जरूरत पेड़ का पत्ता भी क्यों तोड़ें, फल-फूल तो दूर की बात रही। बिना जरूरत दाँतों के नीचे चीज़ों को क्यों पीसें, यह भी तो एक प्रकार की हिंसा है। गांधी जी ने कहा, जिसने स्वादेन्द्रिय को जीता, वही वास्तव में पाँचों विकारों को जीत सकता है। शिव भगवानुवाच, 'प्रकृति और माया के अधीन न होकर दोनों को अधीन बनाना है, तब अपना अधिकार प्राप्त कर सकेंगे। इन्हें जितना अधीन करोगे, उतना प्रकृति और लोगों द्वारा सत्कार होगा। एक-एक लौकिक बात में अलौकिकता लाओ, पाँव यहाँ चल रहे हैं लेकिन बुद्धि याद की यात्रा में। शरीर को भोजन दे रहे हैं लेकिन आत्मा को फिर याद का भोजन देते जाओ।' ❖

शिक्षक ने दिखाई राह

ब्रह्माकुमारी अमिता मराठे, इन्दौर (प्रेमनगर)

सुरेश एक होवनहार लड़का था लेकिन कॉलेज में दाखिला लेने के बाद उसका व्यवहार बदलने लगा। गलत संगत में पड़ने की वजह से पढ़ाई-लिखाई पर उसका ध्यान कम हो गया। घरवाले गलत संगत पर उसे टोकते पर वह यही जवाब देता कि मैं भले ही ऐसे लड़कों के साथ रहता हूँ पर मुझ पर उनका कोई असर नहीं होता है। नतीजा यह हुआ कि सुरेश उस साल परीक्षा में एक विषय में फेल हो गया। हरदम अव्वल आने वाले सुरेश के लिए यह किसी सदमे से कम नहीं था। वह बिल्कुल टूट-सा गया।

अब वह न घर से निकलता और न ही किसी से बात करता। जब यह बात सुरेश के एक पुराने स्कूली शिक्षक को पता चली तो उन्हें यकीन नहीं हुआ। सुरेश उनका प्रिय छात्र रहा था। उन्होंने एक दिन सुरेश को अपने घर बुलाया। सर्दियों के दिन थे और सुरेश जब उनके घर पहुँचा तो वे आंगन में बैठे अंगीठी पर हाथ सेंक रहे थे। सुरेश उनकी बगल में बैठ गया। कुछ देर बाद शिक्षक ने अंगीठी में से एक धधकते कोयले को निकाला और नीचे मिट्टी में डाल दिया, कोयला थोड़ी देर बाद बुझ गया।

यह देख सुरेश बोला, 'सर, आपने धधकते कोयले को मिट्टी में क्यों डाल दिया? ऐसे तो यह बेकार हो गया। अगर आप उसे अंगीठी में ही रहने देते तो अन्य टुकड़ों की तरह वो भी गर्मी देने के काम आता।' शिक्षक मुसकराए और बोले, 'यह कोयला बेकार नहीं हुआ', यह कहते हुए उन्होंने उसे उठाकर वापस अंगीठी में डाल दिया। वहाँ जाते ही वह पुन: धधकते हुए गर्मी देने लगा। इसके बाद शिक्षक ने सुरेश को समझाते हुए कहा, 'तुम्हारी स्थिति भी इस कोयले जैसी है। जब तुम अच्छी संगत में रहते थे, मेहनत करते थे, तो अच्छे नम्बरों से पास होते थे पर गलत संगत में पड़कर तुम पढ़ाई से विमुख हुए फलत: फेल हो गए। किन्तु ध्यान रखो कि एक बार फेल होने से तुम्हारे अन्दर के वो सारे गुण समाप्त नहीं हो गए। जैसे कोयले का यह टुकड़ा कुछ देर मिट्टी में पड़े होने के बावजूद बेकार नहीं हुआ और वापस अंगीठी में आने पर धधक उठा, उसी तरह तुम भी पुन: अच्छी संगत को पाकर, मेहनत कर मेधावी छात्रों की श्रेणी में आ सकते हो।' सुरेश समझ चुका था कि उसे क्या करना है। उसने उठकर शिक्षक के चरण छुए और अपने घर की ओर चल दिया।

यह प्रसंग दुनिया के अनेक लौकिक छात्रों के लिए प्रेरणादाई है। किसी कारणवश लक्ष्य से विमुख होने वाले विद्यार्थी, पुन: मेहनत कर उसे पा सकते हैं, यह असम्भव नहीं है। अलौकिक पढ़ाई में भी परमशिक्षक परमात्मा अपने रूहानी विद्यार्थियों को यही कहते हैं कि किसी भी प्रकार के कुसंग के कारण अपनी चाल धीमी न होने दो। तीव्र पुरुषार्थी बन आगे बढ़ते और बढ़ाते रहो। ❖

मेरा डॉक्टर बाबा

हर्षिता शर्मा, वैशाली नगर, जयपुर

मैं कक्षा 4 में पढ़ती हूँ। जब मैं कक्षा 2 में थी तब एक बार खेलते हुए नुकीले पत्थर से मेरी पीठ में चोट लग गई थी। चोट रीढ़ की हड्डी में नीचे की साइड में लगी थी इसलिए बहुत दर्द होता था। कई डॉक्टरों को दिखाया, दवा भी बहुत ली लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ, और ही धीरे-धीरे दर्द बढ़ता गया और पूरी पीठ में दर्द होने लगा। यहाँ तक कि पीठ पर हल्के से मारने से भी बहुत तेज दर्द होता था। सबको, स्कूल में टीचर को भी मना कर रखा था कि इसकी पीठ पर न मारें।

दीदी ने कामेन्ट्री से योग कराया

डॉक्टरों ने कहा कि यह दर्द अब ठीक नहीं होगा। उन्होंने एम.आर.आई.कराने को कहा। मम्मी तो रोने लगी कि पता नहीं अब क्या होगा। फिर मेरी दीदी ने जो कि ज्ञान में चलती हैं, कहा कि चल मैं तुझे योग कराती हूँ, बाबा तेरा दर्द ठीक कर देंगे। मैंने कहा, हाँ, ठीक है मुझे योग कराओ। मुझे तो योग करना आता नहीं था। मैंने कहा, 'मैं कैसे योग करूँगी?' दीदी ने कहा, 'जैसे-जैसे मैं बोलती जाऊँ, वैसे-वैसे तू महसूस करना, दर्द बिल्कुल ठीक हो जाएगा।' फिर दीदी ने मुझे कामेन्ट्री से योग कराया।

दर्द एकदम गायब हो गया

दीदी मुझे योग करा रही थी कि ऊपर से बाबा आ गए हैं और मेरी पीठ पर हाथ फेर रहे हैं। फिर दो मिनट के अन्दर मुझे ऐसा लगा कि मेरा दर्द एकदम गायब हो गया है। मेरी पीठ में हमेशा दर्द होता रहता था, उस समय ऐसा लगा मानो पीठ में हल्कापन आ गया है। मैं अचानक जोर से दीदी से बोली, दीदी, देखो, मेरा दर्द ठीक हो गया, बाबा ने मेरी पीठ पर हाथ फेरा और मेरा दर्द गायब हो गया। दीदी चौंक कर मेरी तरफ देखने लगी। मैंने कहा, मेरी पीठ पर मारो, देखो, अब कोई दर्द नहीं है। दीदी ने धीरे से मारा। मैंने कहा, नहीं, जोर से मारो। दीदी ने फिर जोर से भी मारा लेकिन मुझे दर्द नहीं हुआ। पहले तो पीठ को हाथ लगाने से भी दर्द होता था। दीदी ने पूछा, तुम्हें क्या महसूस हुआ था? मैंने कहा कि जब आप योग करा रही थी तब मुझे ऐसा लग रहा था कि बाबा मेरी पीठ पर हाथ फेर रहे हैं। उनके हाथ फेरते ही मेरा दर्द गायब हो गया।

चोट का निशान भी धीरे-धीरे मिट गया

फिर मैंने अपनी मम्मी को बताया, पहले तो उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ। बाद में जब उन्होंने मेरी पीठ को टच करके देखा तो उन्हें विश्वास हुआ। घर में सबको विश्वास हो गया है। अब मैं रोजाना योग करती हूँ। मेरी मम्मी ज्ञान में नहीं चलती थी। मेरे अनुभव के बाद वे भी ज्ञान में चलने लगी। बाबा पर उन्हें अटूट विश्वास हो गया है। अब घर में सभी ज्ञान में चलते हैं। मेरी रीढ़ की हड्डी पर चोट का नीला निशान पड़ गया था, वह भी अब धीरे-धीरे मिट गया है।

इस बात को साल भर हो गया है। मेरा दर्द एकदम ठीक है। यह बाबा की ही कमाल है। जिसे डॉक्टर ठीक नहीं कर पाए, उसे बाबा ने पलक झपकते ठीक कर दिया। बाबा, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। ❖

खूबसूरत तस्वीरें नेगेटिव से तैयार होती हैं और वो भी अंधेरे कमरे में, इसलिए जब भी आपके जीवन में अंधकार नजर आये तो समझ लीजिए कि ईश्वर आपके भविष्य की सुंदर सी तस्वीर का निर्माण कर रहा है।

गतांक से आगे ...

मानव जीवन में धन की उपयोगिता

ब्रह्माकुमार नरेश, मुज़फ्फ़रनगर

यदि बचपन के दो मित्रों में से एक कुछ वर्षों के बाद अमीर बन जाता है और दूसरा गरीब रह जाता है तो उनकी मित्रता तब ही कायम रह सकती है जब दोनों चरित्रवान हों। यदि एक गरीब व्यक्ति की मित्रता किसी अमीर से हो जाती है तो गरीब के लिये मित्रता निभा पाना आसान नहीं होता। कहावत भी है, 'या तो हाथी वाले से मित्रता न करो या फिर ऐसा मकान बनवाओ, जहां उसका हाथी बांध सको।' तीन मित्र थे। उनमें एक गरीब था और दो अमीर। एक दिन दोनों अमीर मित्र अपने गरीब मित्र के घर गये। उस गरीब के पास अपने मित्रों की सेवा के लिए मात्र एक गिलास दूध था। उसने दूध गर्म किया और दो स्टील के गिलास आधे-आधे भर कर अपने मित्रों को पीने के लिये दिए और खुद के गिलास में पानी डाल कर दूध पीने का स्वांग किया। जब दोनों अमीर मित्र वापस लौट रहे थे, तो एक ने कहा कि हमारा मित्र कितना अच्छा है, उसने अपने हिस्से का दूध भी हमें पिला दिया। दूसरा मित्र नाराजगी से बोला कि उसने तो आधा गिलास दूध दे कर हमारी बेइज्जती की है, यदि उसके पास दूध की कमी थी तो बस पानी ही पिला देता। उसने खुद पूरा गिलास दूध पीया होगा। तो मित्रता में धन का फर्क नहीं बल्कि दृष्टिकोण का फर्क बाधक बन सकता है। आज सुदामा करोड़ों मिल जायेंगे परन्तु कृष्ण जैसा कोई नहीं मिलता। सतयुग में कोई सुदामा नहीं होता और द्वापरयुग या कलियुग में कोई कृष्ण नहीं होता। सुदामा एक नहीं, कई हैं जिनका कृष्ण से मिलन चल रहे पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही होता है। बस वेश व परिवेश का फर्क है। सुदामा चावल-मुट्ठी अभी दे रहे हैं और जब घर लौटेंगे तो महल मिलेंगे। इस रहस्य को सात दिनों के नि:शुल्क आध्यात्मिक कोर्स करते समय जाना जा सकता है।

फरिश्तों के पर परमात्मा तक ले जाते हैं

गरीबी व अमीरी स्थूल धन से नहीं बनती परन्तु इच्छाओं व दृष्टिकोण से बनती है। लोकेष्णा (मान-सम्मान), वित्तेष्णा (धन-दौलत) व पुत्रेष्णा (पुत्र-संबंधी) आदि के खिंचाव से मुक्त व संतोषी व्यक्ति अमीर है जबकि एक धन्ना सेठ यदि तृष्णाओं या इच्छाओं का गुलाम है तो गरीब है। चतुर तो वह इन्सान है जो इस महामंत्र को समझ ले कि श्रेष्ठ चरित्र व सत्कर्म हों, तो सारी जरूरतें स्वत: पूरी होती रहती हैं और चरित्रहीन व बुरे कर्म हों, तो जीवन तृष्णाओं, डर व दुख-अशान्ति में कटता है। कहा जाता है कि That man is the richest, whose pleasures are the cheapest अर्थात् वह व्यक्ति सबसे धनी है जिसे खुशी सहज-सुलभ है। आज खुशी का आधार धन मान लिया गया है। ज्यादा धन, ज्यादा खुशी। यदि धन सचमुच खुशी देता तो धनी रात में सोने के लिए गोली क्यों खाता और जागने के लिए अलार्म क्यों लगाता? गरीब फर्श पर लेटते ही क्यों खर्राटे भरने लगता और सवेरे तरोताजा स्वत: ही क्यों उठता? धन-जनित कई शारीरिक व मानसिक व्यथाओं से ग्रस्त अमीर भला खुश कैसे रह सकता है? ऐसी व्यथाएं गरीबों में कम देखी जाती हैं। क्या बुलेटप्रूफ गाड़ी में कमाण्डोज के साथ सफर कर रहे धनी या उच्च राजनेताओं को खुशी प्राप्त है? उन्हें तो सच्ची खुशी क्या है, इसका भी ज्ञान व अनुभव नहीं है। खुशी तो उस मनुष्य के पास है जो साइकिल पर गीत गुनगुनाता हुआ अपनी मस्ती में जा रहा है। जो करोड़पति-अरबपति खुले आकाश के नीचे, भरे बाजार या उपवन में बेफिक्री से पैदल चलने का सुख नहीं ले पाता, उसके पास न तो स्वास्थ्य होगा, न खुशी और न सौभाग्य भरा भविष्य! उसका धन व

पद का अहंकार, खुशी व शान्ति के उपहार को अस्वीकार कर देता है। धन व पद की बैसाखी पर खड़ा अहंकार, प्रभु-प्रदत खुशी व शान्ति के फरिश्तों जैसे दो पंखों से भला क्या मुकाबला कर सकता है! अहंकारी के पैर मिट्टी पर रहते हैं और मिट्टी में मिल जाते हैं जबकि फरिश्तों के पर आकाश में रहते हैं और परमात्मा तक ले जाते हैं।

हर कोई करना चाहता है गुणी व्यक्ति की निःशुल्क सेवा

पहले कहा जाता था कि अपमान या शर्म की अमीरी से इज्जत की गरीबी अच्छी है परन्तु आज अमीरी व्यक्ति को बेशर्म बना देती है। आज अमीर बाप जल्दी न मरता हो तो बेटे को दुख होता है जबकि गरीब बाप लंबी आयु के बाद मरता है तो भी बेटे को दुख होता है। यदि कोई धनी मनुष्य हँस नहीं सकता तो वह धनी नहीं और यदि कोई गरीब मनुष्य हँस सकता है तो वह गरीब नहीं। यह देखा गया है कि धनी मनुष्य धन को बढ़ाने व उसकी रक्षा की चिन्ता में हँसना भी भूल जाता है। उसकी अतृप्त चाहनाएं, इच्छाएं और चिन्ताएं उसे मनहूस-सा बना देती हैं। उससे बड़ा गरीब और कोई नहीं। गरीब वह नहीं है जिसके पास धन कम है बल्कि गरीब वह है जो धन का प्यासा है। जल के प्यासे को शीतल जल तृप्त कर देता है परन्तु धन का प्यासा तो आते हुए धन से और भी प्यासा होता जाता है। गरीबी कोई अभिशाप नहीं है बल्कि एक असुविधा है। इतिहास गवाह है कि लगभग सभी महापुरुषों ने असुविधाओं से गुजर कर महानता प्राप्त की थी। गरीबी या तो उत्थान-जनक-क्रांति है या फिर अपराध की जननी। जो गरीब हो कर भी प्रसन्नता से जीना जानता है, वह ज्ञानी है। ज्ञानी मनुष्य सबसे बड़ा धनवान है क्योंकि उसकी प्रसन्नता स्वतंत्र है अर्थात् किसी धन, वस्तु या व्यक्ति पर आधारित नहीं है। सच्चा धनी होना धन की मात्रा पर निर्भर नहीं करता बल्कि आवश्यकताएँ कितनी कम हैं, इस पर निर्भर करता है। ज्ञानी की आवश्यकताएँ सीमित या कम होती हैं परन्तु उसका कोई भी काम धन की कमी के कारण नहीं रुकता। यह कुदरती विधान है कि एक संस्कारवान-ज्ञानवान व्यक्ति की आवश्यकताएँ स्वतः पूरी होती रहती हैं। धन उसके पीछे-पीछे चलता है। कहावत है कि पैसा पैसे को खींचता है परन्तु सच तो यह है कि पैसा, गुणी व्यक्ति के पीछे सेवा हेतु खिंचता चला जाता है यद्यपि वह व्यक्ति उसकी कामना नहीं करता। भारतीय इंजिनियरों के पितामह डॉ. विश्वेश्वरैया जब मैसूर रियासत के दीवान थे तो एक गांव में उनका कैंप लगा था। वहाँ कार्य करते हुए उनकी उंगलियों में चोट लग गई। गांव के डॉक्टर ने जब उनका उपचार किया, तो विश्वेश्वरैया ने 50 रुपये का एक चेक डॉक्टर को फीस के रूप में दिया परन्तु डॉक्टर बोला कि मैं आपकी सेवा करके अभिभूत हूँ। मैं आपसे फीस कैसे ले सकता हूं अर्थात् गुणी व्यक्ति की फ्री सेवा हर कोई करना चाहता है। विश्वेश्वरैया ने डॉक्टर से कहा कि जो गरीब आपकी फीस नहीं दे सकते, आप उनसे फीस मत लेना परन्तु मैं तो सक्षम हूँ, आपने अपना कर्त्तव्य किया, अब मुझे मेरा कर्त्तव्य करने दें।

दूसरे की भावनाओं को धन के तराजू से न तोलें

कलियुग की एक पहचान यह भी है कि व्यवसायिक गुणवत्ता वाला वह व्यक्ति भी लोभी हो जाता है जिसे धन की कोई कमी न हो। एक चिकित्सक के हाथ में ऐसी कुदरती इनायत थी कि वह जिस भी मरीज को हाथ लगाता, उसका उपचार करता, वह ठीक हो जाता था। एक धनी विधवा को कई बीमारियों ने परेशान कर रखा था। कई जगह असफल उपचार कराने के बाद वह इस चिकित्सक के संपर्क में आई। इलाज लम्बा चला परन्तु वह विधवा अंततः ठीक हो गई। ठीक हो जाने के बाद वह काफी समय तक चिकित्सक के पास नहीं जा पाई परन्तु चिकित्सक को यह स्मृति रहती थी कि इस औरत से मुझे उपचार के बकाया 500 रुपये अभी लेने हैं। उस विधवा को संकल्प चलते थे कि इस चिकित्सक ने मुझे नया जीवन दिया है, तो एक दिन उसका धन्यवाद करने चलूं और उसे बकाया फीस व कुछ सौगात भी दे दूं। एक दिन वह एक सुन्दर बैग में 'कुछ' रख

कर उस चिकित्सक के पास गई। उसने चिकित्सक का धन्यवाद किया और वह बैग उसे सौगात में देने लगी। चिकित्सक ने मन में सोचा कि यह बैग मुश्किल से 200 रुपये का होगा और यह चालाक औरत बैग दे कर मेरी पिछली फीस के 500 रुपये भुलाना चाहती है। चिकित्सक ने बैग पर उपेक्षा भरी नजर डालते हुए क्रोध भरे लहजे में कहा कि पहले तुम मेरे 500 रुपये अदा करो, जिन्हें तुम भुला देना चाहती हो। विधवा थोड़ा दुखी व हैरान हुई। उसने मेज से वह बैग उठा कर उसकी चेन खोली और पांच लाख रुपये का बंडल निकाल कर उसमें से 500 रुपये का एक नोट बाहर निकाला। बंडल को पुन: बैग में रख कर वह नोट चिकित्सक के सामने रखा और बैग के साथ वापस लौट गई। चिकित्सक यह देख कर चक्कर खा गया। कई बार मनुष्य दूसरे की भावनाओं को धन के तराजू में तोल बैठता है और लंबे समय तक पछताता है।

भव्यता से भय आता, दिव्यता से देवत्व आता

किसी ने कितना धन कमाया है, यह महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण तो यह है कि धन कैसे कमाया है। किसी का धन कहां लगा है, यह महत्वपूर्ण नहीं, महत्वपूर्ण तो यह है कि उसका धन कहां तक कल्याण करने में लगा है। किसी ने धन कब प्राप्त किया, यह महत्वपूर्ण नहीं, महत्वपूर्ण तो यह है कि उसका धन अब क्या कर रहा है! कहीं यह कैद में तो नहीं? धन किसी के जीवन में कितनी भव्यता ला रहा है, यह महत्वपूर्ण नहीं, महत्वपूर्ण तो यह है कि उसका धन यदि पवित्र है तो कितनी दिव्यता प्रदान कर रहा है। भव्यता के साथ भय भी आता है और दिव्यता के साथ देवता आते हैं। ईश्वरीय ज्ञान से पता चलता है कि तुच्छ-सा धन मात्र एक साधन है जो किसी की साधना में या तो मददगार हो सकता है या साधक को साधनों के मायाजाल में फंसा सकता है। दूसरे की सुपुर्दगी में धन धरोहर कहलाता है जो कई बार सहोदर से भी शत्रुता करा देता है। चूंकि स्थूल धन को व्यक्ति अपने साथ-साथ ले कर नहीं घूम सकता अत: जहां भी वह धन को रखता है वहां उसकी बुद्धि फंसी रहती है। परन्तु ज्ञान, गुणों व शक्तियों का सूक्ष्म धन तो हमेशा व्यक्ति के साथ रहता है और उसे खुशी व बेफिक्री प्रदान करता रहता है। ऐसे धनी की संगत से दूसरे की रंगत स्वत: बदलने लगती है, वह भी धनी होने लगता है। जिस प्रकार एक चम्मच दही से पूरी बाल्टी का दूध दही बन जाता है, उसी प्रकार मात्र कुछ वर्षों तक ईश्वरीय मत पर चल कर देहअभिमानी मनुष्य भी देही (आत्मा) अभिमानी हो, 84 जन्मों के भाग्य को प्राप्त कर लेता है। जैसे दही बनने के लिए दूध को कुछ गर्म होना और दही के जामन के साथ शान्ति में टिकना जरूरी होता है, वैसे ही विकारी से निर्विकारी बनने के लिए आत्मा को भी ज्ञानसूर्य शिव से ज्ञान-अमृत (मनमनाभव, मध्याजी भव) का जामन व योग-ऊष्मा प्राप्त करना व शान्त स्वरूप स्थिति का अभ्यास करना जरूरी होता है।

आत्मिक धन में वजन नहीं होता

असली धन है आत्मिक-धन जिसमें वजन नहीं होता। स्थूल धन बाहर इकट्ठा किया जाता है जो आत्मा पर वजन डाले रहता है। पहले 'एक पैसा' भी सिक्के के रूप में बाजार में चलता था परन्तु अब एक रुपये का सिक्का बाजार में हांफ रहा है। यहां तक कि भिखारी भी उसे ओछी नजर से देखते हैं। पहले बाजार में रेजगारी का अपना महत्व था और हर स्थान पर छोटे सिक्के नजर आते थे। आज बाज़ार में रेजगारी का स्थान बेरोजगारी ने ले लिया है। ये बेरोजगार हर स्थान पर धक्के खाते नजर आते हैं। ऐसे बेरोजगार फिर लूटपाट, चोरी-डकैती का पेशा बना लेते हैं। सरकार छोटी रेजगारी का चलन बंद कर चुकी है परन्तु आज की बड़ी बेरोजगारी का चलन बंद किया जाना बाकी है। युवाओं के पास दैहिक शक्ति रूपी धन व प्राप्त शिक्षा रूपी धन होते हुए भी उनका बेरोजगार रहना देश का बड़ा नुकसान है। यह तो ऐसे हुआ जैसे कि लाखों टन गेहूं एफ.सी.आई. (Food Corporation of India) के गोदाम में सड़ जाते हैं और फिर भी हजारों गरीब भूखे मरते हैं। **(क्रमश:)**

मैं आशावादी और प्रसन्नचित्त हूँ

ब्रह्माकुमारी सरोज, सरस्वती विहार, दिल्ली

बात आज से लगभग 12 वर्ष पहले की है। मैं विद्यालय में प्रधानाचार्य के पद पर कार्यरत थी। एक दिन विद्यालय में मुझसे मिलने पाँच भाई आए और उन्होंने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के ज्ञान का परिचय देते हुए छोटी-छोटी पुस्तकें दीं। उन्होंने मेरी ही कालोनी में स्थित ब्रह्माकुमारी आश्रम में आने का निमन्त्रण भी दिया। ये भाई मुझे अन्य लोगों से कुछ अलग लगे।

एक वर्ष बीत गया। महाशिवरात्रि आई। मुझे याद आया कि कुछ भाइयों ने आश्रम आने के लिए कहा था तो चलो देखती हूँ वहाँ क्या है। मैं अपने युगल के साथ आश्रम पहुँची तो वहाँ की शान्ति और पवित्रता को देखकर एकदम टचिंग हुई कि मुझे यहाँ ही आना चाहिए। अगले ही दिन से सात दिन का कोर्स करना आरम्भ कर दिया। परमात्मा और आत्मा का ज्ञान बहुत अच्छा लगा। कोर्स करने के बाद प्रतिदिन शाम को राजयोग और मुरली के लिए जाने लगी। मेरे युगल भी मेरे साथ जाने लगे। उन्हें भी बहुत अच्छा लगा।

बाबा से मिली शक्ति

एक दिन विद्यालय से लौटी तो बाबा ने मुझे महसूस कराया कि बच्ची तेरे को कैंसर हो गया है (अभी ज्ञान में चलते 2½ महीने ही हुए थे)। डॉक्टर को दिखाया, टैस्ट कराया तो कैंसर निकला। घर आकर मैं बहुत रोई। रात को सोने से पहले बाबा को याद किया और प्रार्थना की कि बाबा आप शक्ति के सागर हो और मुझे उस सागर में से केवल एक बूंद शक्ति की दे दो जिससे मैं इस असहनीय कष्ट को हंसते-हंसते सह जाऊँ। सुबह उठी तो अपने में अनोखी शक्ति पाई। सब रिश्तदारों को फोन कर दिया कि मुझे कैंसर हो गया है परन्तु मैं जल्दी ही ठीक हो जाऊँगी। सभी घबरा रहे थे और मैं खुश थी। वाह मेरा बाबा – मुझे कैसी शक्ति का नशा दे दिया था। बेटे का फोन आया, उसको भी हिम्मत दी।

ऑपरेशन के समय बाबा के साथ की अनुभूति

सोमवार मुझे कैंसर का पता चला और बृहस्पतिवार मेरा ऑपरेशन भी हो गया। ऑपरेशन थियेटर में जाने से पहले बेटे को पत्र लिखा कि तुम घबराना नहीं, मैं मरूँगी नहीं। यह भी लिखा कि तुम अपने पापा और बहन का ख्याल रखना। मुझे स्ट्रैचर पर डालकर ऑपरेशन थियेटर ले जा रहे थे तो सबको बाय-बाय कर मैंने आँखें बंद कर लीं। मुझे ऐसा लगा, बाबा मेरे साथ चल रहे हैं। डाक्टर से बातें कीं, मैं खुश थी, कोई भी घबराहट नहीं थी। बी.पी.बिल्कुल सामान्य था। ऑपरेशन हो गया। एक घण्टे बाद अमेरिका में अपने बेटे से बातें भी कर लीं। तीसरे दिन अस्पताल से घर वापिस आ गई। ऑपरेशन 9 मई, 2002 को हुआ था और विद्यालय में दसवीं, बारहवीं कक्षा का परिणाम 25 मई और 30 मई को आया। अभी मेरे ऑपरेशन वाले स्थान से फ्लूयड पाइपों के रास्ते से निकलकर प्लास्टिक बाक्स में जा रहा था। मैंने ब्लाउज़ के नीचे पाइपें ढक लीं, बॉक्स पर्स में डाल लिया और स्कूल चली गई। पूरा काम किया। बाबा ने ऐसी योजना बनाई कि मुझे छुट्टी नहीं लेनी पड़ी और सारा काम (बीमारी) ग्रीष्मावकाश में ही निपट गया। उसी वर्ष सितम्बर में मुझे रिटायर होना था। जुलाई से सितम्बर तक विद्यालय के बहुत से कार्यक्रम कराए और अधूरे कामों को पूर्ण किया।

जन्म दिन मनाने का नया तरीका

सितम्बर मास में मेरा जन्म दिन था। मैंने सोचा, क्यों न सारे स्टाफ का चैकअप करवा दूँ। ऐसा करने से मुझे तसल्ली होगी कि मेरा स्टाफ ठीक है। राजीव गांधी अस्पताल (जहाँ मेरा ऑपरेशन हुआ था) से डॉक्टर्स और अन्य सहयोगी कर्मचारियों की टीम को बुलाया और स्टाफ का चैकअप कराया। बाबा का धन्यवाद किया, सब ठीक थे। डॉक्टर्स ने भी मेरा जन्मदिन मनाया और मेरे इस कार्य के लिए सबने खुशी प्रकट की। मैं चाहती हूँ कि सबके सामने मैं एक शक्ति और उत्साह का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करूँ। ऐसा लग रहा है, बाबा मेरे साथ-साथ हैं। मेरे बाबा की महिमा अपरम्पार है। उस दिन प्राप्त वह एक बूंद शक्ति आज समुद्र बन चुकी है। मैं पूर्णरूपेण स्वस्थ हूँ। सदा आशावादी और प्रसन्नचित्त रहती हूँ। गाड़ी चलानी सीखी 68 वर्ष की आयु में और अब 72 वर्ष की आयु में भी चला रही हूँ। अब तो यह तमन्ना है, बाबा मुझसे अधिक से अधिक सेवा करवाएँ और मैं करती ही रहूँ। मुझे लगता है, इस जन्म में तो क्या, पूरे 84 जन्मों तक भी मैं बाबा का ऋण नहीं चुका सकती। वाह मेरे बाबा वाह! ❖

मुसीबत बनी सूली से कांटा

नरेन्द्र कौर छाबड़ा, औरंगाबाद

बात दिसंबर, 2013 की है, चंडीगढ़ में एक लौकिक कार्य से जाना हुआ और समय निकालकर हमने पंजाब और हरियाणा के एक-दो शहरों को देखने की योजना बनाई। निश्चित समय पर टैक्सी वाले ने घंटी बजायी। मेरे एक हाथ में पर्स था तथा दूसरे हाथ से सीढ़ियों की रेलिंग पकड़कर मैं उतरने लगी। चार सीढ़ियाँ ही उतरी थी कि चप्पल फिसल गई। मेरा हाथ रेलिंग से छूट गया। बहुत जोर का झटका लगा और मैं लगातार 10 सीढ़ियों से फिसलती गयी। हर सीढ़ी पर शरीर का दायां हिस्सा पटक रहा था। उन चंद क्षणों में ही मुझे महसूस हुआ मानो कनपटी के ऊपर सिर से खून की धार बह रही हो। जब मैं आखिरी सीढ़ी पर पहुँची तो स्नेही जनों ने मुझे देख लिया और कहा, आँखें खोलो, आप ठीक तो हो? कुछेक मिनटों के बाद मैंने आँखें खोलीं, पानी पीया। सहारा देकर मुझे खड़ा किया गया। धीरे-धीरे चलते हुए कमरे में लाया गया। तब तक कंधों में बहुत दर्द शुरू हो गया था। गरम पानी से सेंक देकर मुझे दर्द निवारक गोली खिलाई गई। इस बीच ध्यान आया, आँखों पर लगा चश्मा वैसे ही लगा हुआ है, उसकी डंडी चुभने से दर्द हो रहा था। उसे उतारा तो देखा, भ्रकुटि के ऊपर काफी सूजन थी, माथे पर भी सूजन आ गयी थी।

घंटे भर पश्चात् मुझे अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टर ने देखकर कहा, स्कैनिंग व एक्सरे करने पड़ेंगे, अगर दिमाग में खून जम गया होगा तो ऑपरेशन करना पड़ेगा। मैं तो लगातार बाबा को याद कर रही थी और मुझे विश्वास भी हो रहा था कि ज्यादा चोट नहीं लगी है। जब एक्सरे व स्कैनिंग की रिपोर्ट आई तो डॉक्टर ने कहा, आप भाग्यशाली हैं, आपकी सभी हड्डियाँ सुरक्षित हैं, कहीं कोई फ्रैक्चर नहीं है, दिमाग में भी कोई चोट नहीं लगी है, जो बाहरी चोटें, सूजन आदि हैं वे दवा से महीने भर में ठीक हो जाएंगी। दवा लेकर, चार-पाँच दिन वहीं आराम करके वापस अपने घर औरंगाबाद लौट आए।

यहाँ यह जिक्र करना आवश्यक है कि मेरे दाहिने घुटने का प्रत्यारोपण हो चुका है और जब मैं गिरी तो हर सीढ़ी पर घुटना भी पटक रहा था लेकिन मेरा घुटना भी सुरक्षित रहा। मेरे पर्स में हमेशा बाबा की फोटो व बैज रहता है। उस दिन भी पर्स हाथ में ही था। यह कमाल तो बाबा की है उन्होंने मेरी मुसीबत को सूली से कांटा बना दिया। ❖

कदम-कदम पर बाबा की मदद

ब्रह्माकुमार प्रकाश ठाकुर, चम्बा

बात अप्रैल, 2004 की है, मैं चम्बा (हि.प्र.) से अपने पिताजी तथा भान्जे, भान्जी (7 और 5 साल) के साथ शिमला जा रहा था। तभी अचानक मुझे गाड़ी सड़क से फिसलती हुई नजर आई। ड्राइवर से कुछ कह पाता, इससे पहले गाड़ी ने पलटा खाया और लगभग 10-15 फुट नीचे उलट गई। जिस जगह गाड़ी पलटी थी, केवल वही थोड़ी-सी जगह गाड़ी के टिकने जैसी थी, अगर 5 फुट आगे या पीछे गिरती तो सीधे 10-11 मीटर नीचे दरिया में जाती जिससे किसी का भी बचना नामुमकिन था। गाड़ी के शीशे चकनाचूर हो चुके थे। मेरे अलावा सब थोड़े चोटिल हुए थे और गाड़ी से बाहर निकल आए थे।

मेरी बाजू गाड़ी के नीचे फंसी थी, ड्राइवर व पिताजी गाड़ी हिला-डुला कर बाजू को निकालने की कोशिश कर रहे थे। असहनीय दर्द से मेरा बुरा हाल था। किसी तरह वे मुझे बाहर निकालने में कामयाब हो गये। बाजू कटी तो नहीं थी मगर दबने से निर्जीव हो चुकी थी।

हम सब किसी तरह ऊपर सड़क पर आ गये और मैं सीधा सड़क के किनारे जाकर लेट गया। सुनसान सड़क पर ट्रैफिक भी कम था। तभी एक टूरिस्ट कार, जिसमें केवल 2 ही व्यक्ति थे, हमारे आगे रुक गई। दो यात्री नीचे उतरे, दुर्घटना की जानकारी लेते-लेते उन्होंने मुझे उठाया और अपनी गाड़ी की पिछली सीट पर मेरे साथ पिताजी और बच्चों को भी बिठा लिया। गाड़ी से जरूरी सामान लेकर, ड्राइवर को वहीं गाड़ी के पास छोड़ हम चल दिए। कार वालों ने बताया कि हम इंदौर से घूमने आए हैं, चम्बा-डलहौजी घूमने के बाद हम वाया धर्मशाला, मनाली जा रहे हैं।

अभी एक ही मोड़ मुड़ा था कि उस सुनसान रास्ते में एक किनारे पर कमांडर टैक्सी खड़ी थी और उसका ड्राइवर बैठा सुस्ता रहा था। जैसे ही हम टैक्सी के पास पहुँचे, उसका ड्राइवर और मैं एक-दूसरे को देख आश्चर्यचकित रह गये। ये वही गाड़ी और ड्राइवर थे जिन्हें

पिछली फिल्म की शूटिंग में यूनिट ने लगा रखा था (मैं बॉलीवुड फिल्म इन्डस्ट्रीज़ के साथ भी फिल्म को-ऑर्डिनेटर के रूप में जुड़ा रहा हूँ। मेरा मुख्य कार्य फिल्म की कहानी के अनुसार लोकेशन ढूँढ़ना होता था। अब तक 20-25 फिल्मों की शूटिंग करवा चुका था और करैक्टर एक्टर के रूप में 2-3 फिल्मों में काम भी कर चुका था। इसी बीच मुझे बाबा मिल गये और फिल्में पीछे छूट गई)। उस टैक्सी को लेकर फिर हम धर्मशाला पहुँचे। मुझे आपातकालीन विभाग (एमरजेन्सी) में ले जाया गया लेकिन रविवार होने के कारण एक्सरे विभाग बन्द था अत: निजी एक्सरे क्लिनिक से एक्सरे करवाने को कहा गया। इसी बीच वे पर्यटक बन्धु (टैक्सी लेने से पहले हम जिनकी जीप में बैठे थे), डॉ.द्वारा लिखी गई 4-5 सौ की दवाइयाँ लेकर पिताजी को दे गये। पिताजी ने लाख कोशिश की मगर उन्होंने एक भी पैसा लेने से इन्कार कर दिया। मैं सोच में पड़ गया कि बाबा, क्या यह कोई हिसाब चुक्ता हो रहा है या नया बन रहा है। वे दोनों बन्धु हमसे इजाज़त लेकर मनाली की ओर चले गए। मैं बाबा के द्वारा भेजे गये उन दोनों नेकदिल फरिश्तों को नम आँखों से तब तक देखता रहा जब तक वो आँखों से ओझल नहीं हो गये और उनकी शुभ-यात्रा की कामना करता रहा।

हम उस कमांडर टैक्सी को लेकर एक्सरे करवाने के

लिए हॉस्पिटल के गेट से बाहर निकले ही थे कि बाबा का अगला चमत्कार इंतजार करते मिला। हमारी गाड़ी के बिल्कुल साथ-साथ एक स्कूटर क्रॉस हुआ जिससे ब्रह्माकुमार कर्ण भाई अपने बच्चों के साथ कहीं जा रहे थे। वे कभी चम्बा में राजकीय कॉलेज में प्राध्यापक थे और नियमित मुरली क्लास करते थे। अब धर्मशाला कॉलेज में उनकी सेवा चल रही थी। हम मिले, उन्होंने मेरे हाथ में पट्टी बन्धी देखी, कारण जाना और जब मैंने एक्सरे की बात बताई तो स्कूटर बच्चों के हवाले कर, उन्हें घर जाने को कह वे हमारी गाड़ी में आकर बैठ गये। तत्पश्चात् उन्होंने सारा धर्मशाला छान मारा मगर एक भी एक्सरे क्लिनिक खुला न मिला।

हताश होकर जैसे ही हम हॉस्पिटल की ओर मुड़ने लगे तो बाबा की अगली व्यवस्था इंतजार करते मिली। बी.एस.एन.एल. के एक उच्च अधिकारी शर्मा जी, कभी चम्बा में मेरे बड़े अधिकारी रह चुके थे, अपने कुछ दोस्तों के साथ सैर कर रहे थे। मैंने उन्हें सम्मान देने के लिए गाड़ी रुकवा कर उनका अभिनन्दन किया। उन्होंने भी आदरपूर्वक उत्तर दिया तथा मेरा यह हाल देख कर स्तब्ध रह गये, फिर कारण पूछा। मैंने सब बता दिया। उन्होंने तुरंत अपने एक डॉ.दोस्त को काँगड़ा में फोन किया तथा हमारे साथ काँगड़ा की ओर चल पड़े। वहाँ जाकर क्लिनिक खुला देखा तो जान में जान आ गई। मेरा एक्सरे हो गया। उन्होंने भी पैसे लेने से इन्कार कर दिया। डॉक्टर ने मेरा एक्सरे देखा तथा बाजू भी चेक किया और कहा कि केस क्रिटिकल है क्योंकि जगह-जगह से फ्रैक्चर हुआ है मगर कल कुछ न कुछ कर लेंगे।

अगले दिन मुझे हॉस्पिटल के ऑपरेशन थिएटर में ले जाया गया पर बाद में बताया गया कि ऑपरेशन क्रिटिकल है और पी.जी.आई.चण्डीगढ़ या शिमला जाना पड़ेगा। हमें शिमला तो जाना ही था अत: केस वहीं के लिए रेफर करवा लिया। शर्मा जी का सहृदय धन्यवाद करके और इजाज़त लेकर हम शिमला की ओर रवाना हो गये।

शिमला में ऑपरेशन से पहले हमें एक बार फिर से एक्सरे कराने को कहा गया। फटाफट एक्सरे हो गया। मेरा नया एक्सरे देख कर डॉक्टरों ने एक चिट दी ऑपरेशन का सामान लाने के लिए। सामान आया और ऑपरेशन टेबल के पास रख दिया गया। सामान में एक गोल चक्की, जो प्लास्टिक की बनी थी, मेरे कंधे में फिट होनी थी, को देखकर मेरे मन में एक विचार-सा उठा कि बाबा, मैंने तो सुना है कि आप अपने बच्चों को लोहा नहीं लगने देते अर्थात् चीर-फाड़ से बचा लेते हैं मगर यहाँ तो यह सब होने वाला है। मगर ऑपरेशन के दौरान ऐसा चमत्कार हो गया जिसे देखकर डॉक्टर हैरान हो गये। हुआ यूँ कि जब मेरी नज़र बाजू पर पड़ी तो मैंने अपने बहन-बहनोई (बच्चों के माता-पिता) से शिकायत भरे लहजे में कहा कि डॉक्टरों ने प्लास्टर करने की बजाय क्रेब बैंडेज क्यों लगाया। तब उनके चेहरे पर एक मुसकराहट-सी दौड़ पड़ी। उन्होंने कहा कि डॉक्टर भी हैरान हैं, ये हड्डियाँ अपने आप जुड़ कैसे गईं! कंधे पर चक्की नुमा हड्डी (सही नाम याद नहीं) जिसमें 3 जबरदस्त क्रेक थे उसके साथ ही बाजू की मेन हड्डी जिसके भी दो टुकड़े हो चुके थे, अचानक कैसे जुड़ गये। डॉक्टर लोग बार-बार धर्मशाला में लिए गये व शिमला में लिए गये दोनों एक्सरेज़ में समानता पा रहे हैं मगर ऑपरेशन के दौरान सामने स्क्रीन पर हड्डी टूटने के चिन्ह बिल्कुल नजर नहीं आ रहे थे। अत: काफी चिंतन करने के बाद बाजू क्रेब से बाँध दिया गया और कुछ दिन देखरेख के लिए मुझे हॉस्पिटल में रखा गया। एक सप्ताह बाद जब फिर एक्सरे लिया गया तो बाजू कहीं से भी टूटने के चिन्ह उसमें नहीं आए। अत: डॉक्टरों ने बाजू के ऑपरेशन का विचार छोड़ दिया तथा मुझे छुट्टी दे दी मगर सावधानी के तौर पर महीना भर गले में पट्टी डाले रखने को कहा। मैंने 8-10 दिन बाद, हाथ धोने के लिए गले की पट्टी से हाथ अनजाने में निकाल लिया। मुझे आश्चर्य हुआ कि मैं हाथ सहजता से धो रहा हूँ, कोई दर्द नहीं। बाजू नीचे-ऊपर, दाएँ-बाएँ खूब हिलायी मगर कोई दर्द नहीं अत: मैंने बाजू फ्री छोड़ दी। और आज तक बाजू पहले की तरह पूरी तरह ठीक है। दर्द का या टूटने का नामोनिशान तक नहीं है। आज जब कभी भी इस तरफ ध्यान जाता है तो मन कह उठता है ''वाह बाबा वाह!'' ❖

ईर्ष्या अभिमान की बेटी है

ब्रह्माकुमार हरिशंकर जोशी, मुम्बई

ईर्ष्या गुणों को ग्रहण नहीं करने देती। वह हृदय की क्षुद्रता प्रकट करती है। यदि काँच का प्याला हाथ से गिर जाये तो उसके टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं, इसी तरह ईर्ष्या भी प्रेम के टुकड़े-टुकड़े कर डालती है। मनुष्य यदि दुखी को देखकर दुखी हो जाता है तो समझा जाता है कि उसके हृदय में करुणा का गुण मौजूद है लेकिन यदि वह सुखी को देखकर दुखी बनता है तो समझ लेना चाहिए कि उसके हृदय में ईर्ष्या का दुर्गुण घर किये बैठा है। यह मनुष्य स्वभाव की बड़ी दुर्बलता है कि वह दूसरों के सुख को देख नहीं सकता है। दूसरों के सुख को देख स्वयं सुख का अनुभव करने वाले महान होते हैं।

ईर्ष्या फैलाती है जहरीली हवा

गुणों के रहते हुए भी दोषों को ढूँढ़ने का नाम ईर्ष्या है। ईर्ष्या की लपटें बड़ी भयंकर होती हैं। ईर्ष्या वह काली नागिन है जो समस्त भूमण्डल में अपनी जहरीली हवा फैलाती जाती है। आतंकवाद, ईर्ष्या का ही बेटा है। आतंकवादी, स्वयं की नाकामी की चपेट में आकर अपने चिराग से अपने गाँव व घर में आग लगा बैठते हैं। आज के विश्व में, ईर्ष्या ने एक-दूसरे राष्ट्र को ध्वंस करने का बीड़ा उठा रखा है। आँख में गिरा हुआ रजकण केवल आँख को ही दुख देता है किन्तु याद रहे, आँख में घुसी हुई ईर्ष्या आँख और दिल दोनों को तकलीफ पहुँचाती है।

ईर्ष्या स्वजनों के प्रति ज्यादा फैलती है

एक विचारक ने कहा है ''ईर्ष्या करने वाले के लिए ईर्ष्या की बला ही काफी है क्योंकि उसके दुश्मन उसे छोड़ भी देंगे तो उसकी ईर्ष्या उसका सर्वनाश किये बिना नहीं रहेगी।'' यदि हम दूसरों के वैभव एवं सुख से तुलना करना छोड़ दें तो हमारी वस्तु हमारे सुख के लिए पर्याप्त है। वह व्यक्ति कभी सुखी नहीं हो पाता जो अपने से अधिक सुखी को देखकर दुखी होता है। ईर्ष्यालु स्वभाव वाले को दूसरों के गुण कड़वे लगते हैं। गुणियों के गुण सुनकर उसके मन में क्रोध उत्पन्न होता है। अक्सर देखा गया है कि ईर्ष्या की आग स्वजन, सगे-सम्बन्धी और मित्रजनों में ही अधिक फैलती है। मनुष्य अपरिचित का उत्कर्ष देख सकता है पर अपने ही कुटुम्बीजन या मित्र का उत्कर्ष नहीं देख सकता। ईर्ष्यालु न स्वयं सुखी रह सकता है और न दूसरों का सुख देख सकता है। दूसरों की निन्दा करना और अपने मुँह अपनी प्रशंसा करना ही उसका काम होता है। ईर्ष्या वह बीमारी है जो अन्य सद्‌गुणों को पनपने नहीं देती है। जो इससे बचकर रहता है वही जीवन सफल बना सकता है।

ईर्ष्या दुर्गुण है। हर आत्मा को यह जांचना है कि उसके मन में इस नागिन ने बिल तो नहीं बना रखा है। याद रहे, हमारे दिल को सर्वशक्तिवान परमात्मा निहार रहा है कि कब मेरा यह बालक स्वच्छ दिल वाला बन मेरे दिलतख्त पर बैठे। ❖

घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है।

सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है। अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें:

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू, राजस्थान। मोबाइल: 09413240131

फोन: (02974) 238347/48/49 वेबसाइट: www.ghrc-abu.com

फैक्स: (02974) 238570 ई-मेल: drmurlidharsharma@gmail.com

दिवंगत ब्रह्माकुमारी सावित्री बहन के अलौकिक अनुभव

मीठे-प्यारे बापदादा की अति स्नेही, अथक सेवाधारी, साकार मात-पिता के हस्तों से पली हुई मीठी सावित्री बहन ने अपना बहुमूल्य जीवन सन् 1958 में ईश्वरीय सेवा में समर्पित किया। सादगी और त्याग-तपस्या की आप साकार मूर्ति थीं। आपने पंजाब एवं संपूर्ण विदर्भ में ईश्वरीय सेवायें दीं और 75 वर्ष की आयु में दिनांक 26-01-2015 को शाम 7:30 बजे पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। जाने के कुछ दिन पहले आपके द्वारा व्यक्त किए गए अनुभव प्रकाशित कर रहे हैं – सम्पादक

मेरा लौकिक जन्म मुलतान के पास सेहरी गाँव में एक धार्मिक तथा धनी परिवार में हुआ। बात 1947 की है, देश विभाजन के समय हमारे पाँच परिवारों के 14 सदस्य मौत के घाट उतार दिये गए। खून की नदियाँ और परिवार के लोगों को जलते हुए देखा तो भगवान से अति नाराज हो गई कि यह सब वही करता है (तब कर्मों की गति का ज्ञान नहीं था) और मैं नास्तिक बन गई, भगवान का नाम लेना भी पसंद नहीं था। लौकिक माताजी (किशन देवी), लौकिक बहन (पुष्पा बहन, नागपुर) इन दोनों को भगवान की बहुत लगन थी। घर में कभी एक गुरु का, कभी दूसरे गुरु का सत्संग चलता था। मंदिर प्रतिदिन जाते थे, दानधर्म के संस्कार अच्छे थे। भगवान तो सर्व के कल्याणकारी, रहमदिल, कृपालु हैं, उन्होंने मुझे अपना बना ही लिया। ग्यारह वर्ष की आयु में प्रात: 3 बजे, कभी 4 बजे बाबा ने स्वप्न में भिन्न-भिन्न दृश्य दिखाये।

एक दृश्य में देखा कि श्रीकृष्ण चारपाई पर कोने में बैठे हैं और कहते हैं, आओ सखी, मेरे संग रास करो। मैं भोलीभाली अनजान बच्ची, रास करना तो क्या, कभी देखा भी नहीं फिर भी मेरा हाथ पकड़कर रास कराई। प्रात: उठने के बाद यह सब लौकिक माताजी को सुनाया। वह पड़ोसी माता को कहने लगी, अभी यह बच्ची मेरी नहीं रहेगी या तो मर जायेगी या तो संन्यासी बन जायेगी। स्वप्न के दृश्य देख मेरे मन में वैराग्य उत्पन्न होने लगा था। मैं कहती, हे प्रभु, मैं लड़का होता तो तपस्या करने जंगल चला जाता। स्त्री चोले में हूँ, मैं अभी सच्ची मीरा बनूँगी। सचमुच प्रभु ने बात सुनी और ज्ञान मुरली की मस्तानी मीरा बनाया। बीस वर्ष की आयु हुई तब कुछ देवियाँ (ब्रह्माकुमारियाँ) करनाल (हरियाणा) में आईं और अनेक आत्माओं का जीवन बदल दिया। दो मास ज्ञान में चलने से लौकिक माताजी और पुष्पा बहन के जीवन में आए परिवर्तन को देख इच्छा जागृत हुई कि मुझे भी उन देवियों के पास जाना चाहिये, यही ज्ञान सच्चा-सच्चा है।

वह सुहानी घड़ी आ गई जब मैं लौकिक माताजी के साथ उन देवियों के सम्मुख पहुँची और मनोहर दादी जी के वरदानी बोल निकले, यह तो बनी बनाई है। इन वरदानी बोलों ने मेरे जीवन को बदल डाला। मन में दृढ़ संकल्प किया कि इन देवियों जैसा मुझे बनना ही है, चाहे कितना भी सहन करना पड़े, 'बदल जाये दुनिया ना बदलूँगी मैं।'

मात्र 15 दिन बाद साकार मम्मा-बाबा से दिल्ली में मिलना हुआ। अलौकिक माता-पिता की स्थूल और सूक्ष्म पालना मिली। ईश्वरीय परिवार के दिल के प्यार का कहना ही क्या, सब मेरे अपने हैं, यह अनुभव हुआ। प्रकाशमणि दादी जी तो सचमुच फरिश्ता ही नजर आती थी। सैकड़ों भाई-बहनें परंतु अथाह शांति, चमचमाते हर्षित चेहरे, मुझे दुनिया ही भूल गई। रात-दिन बाबा (शिव भगवान) ही बाबा की मस्ती चढ़ गई।

विदाई की घड़ी आई, ना चाहते वापिस आना पड़ा। जानीजाननहार प्रभु ने की भविष्यवाणी, बच्ची, युद्ध के

मैदान में जा रही हो लेकिन घबराना नहीं, मैं सदा तेरे साथ रहूँगा। मेरे मुख से निकला, मेरे बाबा, मैं आपकी हूँ, आपकी होकर रहूँगी, धरत परिये धर्म न छोड़िये। सचमुच वापिस आते ही जबरदस्त पेपर शुरू हुये, डेढ़ वर्ष सामना करते-करते सर्व बंधनों से मुक्त हो सच्चे अलौकिक माता-पिता के पास पहुँच गई और जहाँ भी ईश्वरीय सेवा अर्थ बड़ों ने आज्ञा की, हाँ जी का पार्ट पक्का रहा।

मधुबन (माउंट आबू) में पहली बार गेट पर कदम रखते ही अनुभव हुआ जैसे मैं स्वर्ग में खड़ी हूँ। तैयार हो पार्टी के साथ मम्मा-बाबा से मिलने गई। मनोहर दादी जी साथ थी। बाबा ने नाम सहित परिचय पूछा, मैंने कहा, सावित्री देवी। बाबा मुसकराये, बोले, बच्ची, अभी देवी बनना है। उस वक्त बाबा का क्या रूप था, याद आते ही जी भर जाता है, प्यार के आँसू रुकते नहीं, ऐसा अलौकिक रूहानी प्यार प्रभु के सिवाय और कोई दे नहीं सकता। यह तपस्वी भूमि बार-बार खींचकर ले आती रही। यहाँ बेहद सेवा का चांस मिलने पर अति खुशी का अनुभव होता रहा तथा बार-बार माता-पिता की रूहानी दृष्टि का सुखद अनुभव होता रहा। सुखद अनुभवों में आधी शताब्दी से भी अधिक समय कैसे बीत गया, मालूम नहीं पड़ा। अब तो एक ही बात बुद्धि में है कि अंतिम जन्म की अंतिम घड़ी है। अब वापिस घर जाना है। हे प्रभु, हे प्राण बाबा, एक आप की ही याद में प्राण निकलें। ❖

ग्लोबल अस्पताल द्वारा संचालित सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र

भारतीय समाज में महिला हमेशा से परिवार की केन्द्र बिन्दु रही है किन्तु यह एक कटु सत्य है कि पितृसत्तात्मक समाज में उसे आज भी आर्थिक स्वतंत्रता से वंचित रखा गया है। ज्यादातर ग्रामीण महिलायें चारदीवारी में ही रहती हैं और उन्हें स्वउन्नति के कम ही अवसर प्राप्त होते हैं। खुद की किसी आय के बिना वे हर जरूरत के लिये पुरुषों पर निर्भर करती हैं। यदि पुरुष शारीरिक अपंगता या व्यसनों आदि के कारण बेरोजगार है तो परिस्थिति और ही विकट हो जाती है। ऐसे में महिलाओं को व्यवसाय प्रशिक्षण के माध्यम से आत्मनिर्भर बना कर वित्तीय स्वतंत्रता दिलायी जा सकती है।

इस वास्तविकता को मद्देनज़र रखकर ग्लोबल अस्पताल द्वारा, ग्रामीण विस्तार सेवा कार्यक्रम के अंतर्गत गोद लिये गये गाँवों में – आबू के 'ओरिया' गांव में और आबूरोड तहसील के 'चण्डेला' आदिवासी गांव में, महिलाओं के लिये निःशुल्क सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जा रहा है। प्रशिक्षण केन्द्र में एक महिला प्रशिक्षक नियुक्त की गयी है और पाँच सिलाई यंत्र रखे गये हैं। प्रशिक्षण केन्द्र में आने वाली हर महिला को काज-बटन से लेकर घाघरा-चोली, पंजाबी ड्रेस इत्यादि सिलने का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण पूरा होने पर महिलायें अपने घर पर ही सिलाई केन्द्र शुरू कर अर्थोपार्जन कर सकती हैं। वर्तमान में 30 महिलायें सिलाई प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं। अन्य दो गाँवों में महिलाओं को प्रशिक्षित कर घर में ही उनको सिलाई मशीन उपलब्ध कराई गई है जहाँ गाँव वाले आकर छोटे-बड़े सिलाई के काम करवाते हैं और हॉस्पिटल की ओर से इन महिलाओं को मानधन की प्राप्ति भी होती है।

ग्लोबल अस्पताल के ग्रामीण विस्तार सेवा कार्यक्रम की प्रमुख डॉ. कनक श्रीवास्तव स्वयं सिलाई केन्द्र के संचालन में परामर्शक की तथा उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने की सेवा करती हैं।

निःशुल्क सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम के छोटे-से प्रयास द्वारा ग्लोबल हॉस्पिटल ने यह सुनिश्चित किया है कि नारी सशक्तिकरण की योजनायें केवल शहरों तक ही सिमटकर न रह जायें बल्कि गाँव की महिलाओं को भी आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिले और वे उन्नत सोच वाली, आर्थिक रूप से स्वतंत्र, सबला नारी बनें! ❖

बाबा ने की तन और धन की रक्षा

विक्रम सिंह, गाँव सग्गा, तरावड़ी (हरियाणा)

मैं लगभग 11 वर्षों से लक्ष्मी पेट्रोल पम्प, तरावड़ी पर मैनेजर पद पर कार्यरत हूँ। पिछले वर्ष एक ब्रह्माकुमार भाई पेट्रोल पम्प पर आया और मुझसे ईश्वरीय ज्ञान के बारे में चर्चा की। फिर मुझे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, तरावड़ी में ले गया, वहाँ निमित्त बहन से मुझे मिलवाया और ज्ञान-चर्चा के दौरान मेरे अनेक संशय दूर हो गये। फिर साप्ताहिक कोर्स शुरू किया और मन में अलौकिक खुशी का संचार होने लगा।

पिछले कई वर्षों से राधास्वामी सत्संग, व्यास से जुड़ा हुआ था लेकिन मन को शान्ति नहीं मिल रही थी। ईश्वरीय ज्ञान का कोर्स करने के बाद हर प्रश्न का हल मुझे मिलने लगा। फिर मैंने नियमित मुरली सुननी शुरू कर दी। इसी दौरान मेरे साथ एक आश्चर्यजनक घटना घटी।

नकाबपोशों ने छीन लिया कैश

मैं प्रतिदिन लगभग तीन बजे स्टेट बैंक, तरावड़ी में कैश जमा कराने जाता हूँ जो कि पेट्रोल पंप से कुछ ही दूरी पर है। उस दिन मैं जैसे ही कैश जमा कराने बैंक की ओर जाने लगा, दो नकाबपोश मेरे पास आये और रिवाल्वर दिखाकर कैश लूटने की कोशिश करने लगे। मैंने कैश देने से इन्कार कर दिया और उनसे हाथापाई करने लगा। इतने में उनका तीसरा साथी भी आ गया और वे सब मिलकर मुझसे कैश छीनने में कामयाब हो गये।

दिल से पुकारा बाबा को

आसपास काफी भीड़ इकट्ठी हो चुकी थी लेकिन किसी ने भी मेरी मदद नहीं की। सभी खड़े तमाशा देख रहे थे। फिर मैंने दिल से बाबा को पुकारा कि शिवबाबा, आओ, मेरी मदद करो। जैसे ही मैंने बाबा को याद किया, भागते हुए नकाबपोशों को एक चाय बेचने वाले ने घेर लिया। डर के मारे वे कैश वहीं छोड़कर, मोटरसाइकिल चालू करके भागने लगे। उसी क्षण मुझे अपने अन्दर विशेष शक्ति की महसूसता हुई और मैंने मोटरसाइकिल के पीछे बैठे हुए दो नकाबपोशों को दबोच लिया। इससे मोटरसाइकिल नीचे गिर गई। फिर उन्होंने पैदल भागने में ही भलाई समझी क्योंकि भीड़ काफी इकट्ठी हो चुकी थी।

कैश वापस मिल गया

पैदल भागते हुए उन्होंने एक अन्य मोटरसाइकिल सवार को रिवाल्वर दिखाकर उसकी मोटरसाइकिल छीनी और फरार हो गये। तभी पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस ने मोटरसाइकिल अपने कब्जे में ले ली और तुरन्त कार्यवाही करके उनको गिरफ्तार कर लिया। इस प्रकार प्यारे शिवबाबा ने मुझ आत्मा की मदद की। मेरा कैश भी मुझे वापिस मिल गया और तन की भी कोई हानि नहीं हुई।

मैं बाबा का कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूँ, बाबा ने मेरा जीवन बचा लिया। मुझे नया जीवन दिया, नहीं तो लूटेरे कुछ भी कर सकते थे लेकिन बाबा की मदद से सब कुछ ठीक हो गया। अब तो दिल से यही निकलता है कि वाह बाबा वाह! वाह ड्रामा वाह! वाह मेरा भाग्य वाह! विपदा आने पर कैसे बाबा बच्चों की मदद करते हैं, यह भी बाबा की कमाल है। अन्त समय जब चारों तरफ हाहाकार होगी तब केवल एक शिवबाबा की याद ही काम आयेगी। बाबा की याद ही हमारी सेफ्टी का साधन बन जायेगी। जिन आत्माओं ने शिवबाबा को अपना सहारा बनाया है वे ही महापरिवर्तन के हर दृश्य को देख सकेंगे। बाबा अन्त समय तक उनके जिम्मेवार रहेंगे। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1

2

3

4

5

6

7

8

1.मुंबई (गामदेवी)- ब्र.कु.भ्राता रमेश शाह जी द्वारा लिखित 'पुरुषोत्तम संगमयुग' पुस्तक के विमोचन अवसर पर मंचासीन हैं राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.कु.गोदावरी बहन तथा अन्य। **2.कुरुक्षेत्र-** कला-संस्कृति अभियान कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए हरियाणा के सामाजिक न्याय तथा सशक्तिकरण राज्यमंत्री भ्राता कृष्ण कुमार बेदी, ब्र.कु.कुसुम बहन, ब्र.कु.लक्ष्मण भाई, ब्र.कु.सतीश भाई, ब्र.कु.सुदर्शन बहन, ब्र.कु.उर्मिल बहन तथा ब्र.कु.सरोज बहन। **3.हरीनगर-** कॉस्ट गार्ड्स् के डायरेक्टर जनरल भ्राता एच.एस.बिष्ट को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सारिका बहन। साथ में कर्नल भ्राता सती जी, ब्र.कु.कृष्णा बहन तथा ब्र.कु.रमन भाई। **4.मोहाली-** पंजाब के शिक्षा मंत्री डॉ.दलजीत सिंह चीमा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.प्रेम बहन। **5.सोनीपत (विश्व कल्याण सरोवर)-** 'इन्नर स्टेबिलिटी' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए हरियाणा की कैबिनेट मंत्री बहन कविता जैन, ब्र.कु.अनुसूईया बहन, ब्र.कु.लक्ष्मण भाई, न्यायाधीश भ्राता वी. ईश्वरैय्या तथा ब्र.कु.रोहित भाई। **6.पूना-** सुप्रसिद्ध अभिनेत्री बहन हेमा मालिनी को ज्ञानामृत पत्रिका देते हुए ब्र.कु.रूपा बहन, ब्र.कु.दीपक हरके तथा ब्र.कु.गीतिका बहन। **7.चीन-** शंघाई में आध्यात्मिक कार्यक्रम के बाद प्रतिभागियों के साथ ब्र.कु.डॉ.सविता बहन। **8.भुवनेश्वर (यूनिट-8)-** ज्यूरिस्ट प्रभाग द्वारा आयोजित सेमिनार 'रिफॉर्मेटिव जस्टिस थ्रू स्प्रीचुअलिटी' के उद्घाटन के बाद ईश्वरीय स्मृति में हैं उड़ीसा उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता देवव्रत दास, ब्र.कु.डॉ.रश्मि ओझा, ब्र.कु.दुर्गेश बहन तथा अन्य।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : November, 2015.

1.शान्तिवन (आबू रोड)-
'राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी समाज' विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, राजस्थान के पशुपालन एवं देवस्थान राज्यमंत्री भ्राता ओटाराम देवासी, राष्ट्रीय स्वयं संघ के राष्ट्रीय नेता भ्राता इंद्रेश कुमार, ब्र.कु.निर्वैर भाई, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई तथा अन्य।

2.वाराणसी-
भारत के प्रधानमंत्री भ्राता नरेन्द्र मोदी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सरोज बहन।

3.शान्तिवन (आबू रोड)-
'गति, सुरक्षा, आध्यात्मिकता' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, सिरोही प्रमुख बहन परशुरामपुरिया, गुजरात के टूरिज्म प्रभाग प्रबंध निदेशक भ्राता पंकज कुमार, तमिलनाडू टूरिज्म कमिश्नर भ्राता एच.एस.मीना, ब्र.कु.भ्राता ओमप्रकाश तथा ब्र.कु.दिव्यप्रभा बहन।

4.मस्कट-
अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस (गांधी जयंती) पर भारतीय दूतावास तथा राजयोग सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए भारत, नीदरलैंड, साउदी अरब, ब्रुनेई, पाकिस्तान, ईरान, थाईलैंड, रशिया तथा दक्षिण अफ्रीका के राजदूत, एस.क्यू. विश्वविद्यालय के उप-कुलपति महामहिम डॉ. ए.एस.ए. बेमानी, ब्र.कु.भारती बहन तथा ब्र.कु.गायत्री बहन।